वैराग्यप्रदीप

श्रीगुरवे नमः

मन्त्रमय गणेश विघनहरन सदा गाइये ।
प्रथम जाहि गायगाय सकल सिद्धि पाइये १
मन्त्रको स्वरूप सोई गजमुख ठहराइये ।
मन्त्रभाग चारिभुजा भाल चन्द्र ध्याइये २
अंकुशासी दूब ज्ञान रूप सो बढ़ाइये ।
मदहर सिंदूर शीश मोदक फल भाइये ३
भक्तमान एकदन्त केवल सुखदाइये ।
देवदेव भक्तन के मानस में आइये ४

सो० रघुपतिपदअनुरागु त्यागु आश यह जगत कौ।
हरिहर जागै भागु लहि वैराग्यप्रदीप को ॥१॥

श्रीमत्कृष्णमिश्रवंशावतंस काशिराज ईश्वरीप्रसाद नारायण-सिंह शर्माने परमकृपापात्र ग्रन्थकार श्रीस्वामीजू महाराज के मेरे पर कृपा करि यह कवित्त लिखादिये ॥

यथा। रविकुलमणि चरणमरीची में मनराखि ग्रन्थन सों लैकै पद परमपदवालानो। वैराग्यदीप नाम बुधसन्त बिशराम आठोंयाम सुखधाम साधत सब कामसो॥ बुद्धिको प्रकाशक बिनाशक विकारन को धारनसे शास्त्रनके तत्त्वबोधधारनसो। श्रीग्रन्थ-कार चरण विद्यमान स्वामी कृपाकारन हरिहरप्रसाद लह्यो है प्रकाशसो १ ॥

वार्ता। भजन करनेवाले को उचित है कि जगत् से वैराग्य करै, त्यागना दो भाँति से, पहिले यथार्थ भजन के लिये, क्योंकि जगत् की प्रीति भजन को रोकती है कि तन व्यवहार में लगा और भीतर भी उसी का ध्यान है तो भजन कैसे होगा एक मन किसी ओर लगा के दूसरी ओर कैसे लगावैगा जगत् और पर-

[illegible] की उपमा सौत की है कि जब एक राजी होगी दूसरी रूठेगी और जगत् परलोक में भेद पूर्व पश्चिम सा भी है जितना एक से निकट दूसरे से दूर होगा। एक महात्मा ने अपने चेले से कहा कि हमने चाहा कि भजन और व्यवहार दोनों करें, पर न होसका, तब व्यवहार छोड़ भजन में जी लगाया। और एक सयाने का यह कहना है कि जिसने परलोक की ओर डीठि दी उसकी दुनिया गई और जिसने दुनिया से प्रीति की परलोक खोया। इससे जाना गया कि जब आदमी ऊपर से दुनिया में फँसा हो तो भीतर उसका मन भजन में किसी भाँति नहीं लगसकता। जब जगत् का भीतर बाहर से नाता छोड़े तब भजन होसकता है। दूसरे यह कि छोड़कर भजन करने से प्रभु राजी होते हैं थोड़े भजन को बहुत मानते और व्यवहार के साथ सारी अवस्था के भजन को थोड़ा जानते हैं। सयानों के निकट त्याग तीन भाँति से है। एक यह कि जो पास न हो उसकी चाह न दूसरे जो वस्तु दुनिया की पास हो उसको दूर करै तीसरे दुनिया की चाह मन से निकालें, इन तीनों में से दुनिया की चाह निकालना कठिन है। बहुत आदमी दुनिया को बाहर से छोड़ते पर भीतर से प्रीति रखते हैं॥

पद। कोइ साफ़ न देखा दिलका, साँचा बना

झिलमिलका ॥ कोइ बकुचा कोइ सिठी देखे पहिरे फ़क़ीरी खिलका । बाहरमुख है ज्ञानछाँटते भीतर कोरा छिलका १ रामभजन में मजब आलसी जैसे मारा मँजिलका । औरन के पिसने में तुरका पटतर लोढ़ासिलका २ पढ़े लिखे कछु ऐसे तैसे बड़ा घमंड अकिलका । जहरी लखुनै मुखसे निकलैं असल साँप के बिलका ३ रामलगन बिनु जप तप झूठा झूठा तवका फ़ज़िल का । क्या कहिये गुरुदेव न पाया महरम आँखके तिलका ४ ॥

वार्ता । एक राजाने किसी लड़ाई के पहिले सोचा कि वैरी से जय पाऊँ तौ हजार रुपये फ़क़ीरों को दे शिर झुकाऊँ. जब जय पाई तब एक सेवक से कहा कि वो रुपये फ़क़ीरों को बाँट दे । वह सेवक बुद्धिमान् सारे दिन फिरा साँझको सब रुपये राजा के पास आकर कहा कि फ़क़ीर नहीं मिलते । राजा बोले कि तू बावला है मेरे जानते तो इस नगर में चारसौ से कम नहीं हैं । उसने कहा जो फ़क़ीर हैं वह रुपया नहीं लेते और जो लेते हैं वे फ़क़ीर नहीं । इसी भाँति का आपको एक पद सुनाता हूँ ॥

पद । राम फ़कीरी रंग अमीरी दमरीसेर नहीं है॥
मुड़मुड़ा या गेरुआ रंगा दिलकारंग वहीहै । चाह
चमारिन नाम कहावै कुछ नाहिं जात कहीहै १
तिलक लगाया कंठी बाँधी खोटी चाल गहीहै ।
तिलक नहाया लोभ नदी में माला जात बही
है २ छकौड़ोमें गरद रहे भई युग युग फेरि सही
है । साहब तो अलगंट गवाँया पाया छाछ मही
है ३ जिसने पूराभाव कमाया तिसकी शाक रही
है । करो सुदेव सलाम मिलनका सबकी जान
यही है ४ ॥

वार्ता । एक फ़कीर एक राजा के पास रहता था राजा उस पर बहुत प्रीति करता । उसको अहङ्कार बहुत हुआ । कभी तो राजा के सिंहासन पर जा बैठे; कभी उसके वसन पहिन फूल उठे कभी उसके वाहनों पर जा चढ़ता कभी राजा के सेवकों पर आज्ञा करता । एक दूसरा साधु अति सुजान विगतमान वहाँपर जा पहुंचा और उस फ़कीरको देख इस पदको गाया ॥

पद । नहिं साध कहावत लगत शरम । बाना

बड़ोवड़ेको पहिरो पाजिनके सब करत करम १ चुपड़ी बोल बोलि लोगनको ठगनो सीखो परम धरम । इहाँ उहाँ कारोमुख होइहै दो दिनमें खुलि जात भरम २ कथनी को बाजार लगायो नहिं जान्यो कछु सारमरम। आँखिन में अँधियारी छाई लपटि गयो मन दाम चरम ३ कर विचार तू नरम देहसों या गंदेसो कधी नरम । मत भूले जो कहा गरभमों हुकुम देवको बड़ो गरम ४ ॥

वार्ता । एक भजनानंद किसी वन में भजन करता था और जब भूख लगती पत्तों से पेट भरता । उस देश का राजा उसके पास गया और कहा कि हमारे नगर में रहैं तो आपके लिये एक मंदिर बनवादूँ, एक कोठरी में बैठ निश्चिन्त भजन कीजै । पर फ़क़ीर ने न माना तब राजा के मंत्रियों ने कहा कि थोड़े दिन इस नगर में रहिये और महाराज को कृतार्थ कीजै। फ़क़ीर ने उन लोगों का कहना माना। नगर में आया । एक उत्तम ठाँव में वास किया । पुष्पवाटिका अतिरमणीय तड़ाग कूप कमनीय वहाँ बने थे । उस स्थान में रहने और भाँति भाँति के वस्त्र पहिनने और भोजन करने

लगा । एक दिन राजा देखने गया कि विरक्त तकिया मसनद लगाये और विचित्र वसन मन भाये पहिने बैठा और आस-पास बहुत लोग घेरे उन्हें ज्ञान उपदेश कर रहे हैं । राजा ने अति प्रसन्न हो कुछ बातकर कहा कि विद्वान् और विरक्तों पर मेरी बहुत प्रीति रहती है । एक मंत्री विचारवान् हाथ जोड़ बोला कि महाराज बात तो यह है कि विद्वानों को द्रव्य दीजिये कि और भी विद्या पढ़ैं और विरक्तों को कुछ न दीजै जिससे विरक्त रहैं । फिर वह मंत्री उस महात्मा से बोला कि इस पद को सुनो ॥

पद । दिल से गई न शेखी तौ मूड़ क्या मुड़ाया । हैवान ही बना है इन्सान क्या कहाया १ कंठी गले में बाँधी छापा तिलक लगाया । यह तो सभी नकल हैं इनका असल न पाया २ सोहबत मिली न उसकी जिसने असल कमाया । सोहबत मिली चटोरी अपना रतन गँवाया ३ तू सोच बात एती को तू कहां से आया । क्योंकर जहां अजूबा किस देव ने बनाया ४ ॥

वार्ता । और बड़ा पुरुषार्थ है कि दुनिया की चाह मन से

न रहै अब त्यागने की चाल जानना चाहिये कि बड़ा त्यागने का यह है कि उसके दुःख और दोष को याद करै ॥

पद । इतनेहु पर ना सूझि परत । गयो बालपन गइ तरुणाई तौ कैसे थिर रही बुढ़ाई । धन के कारण धाइ धाइ के मूरख जूझि मरत १ पुत्र जनम औ पिता मरन से दोनों आपन जानि दरन से । तऊ अमर की नाईं जन से अरुझी अरुझि गरत २ जैसन करम करीजै आई तेकर तैसन आप देखाई । ई सब देखत तदपि कहे से पुनि पुनि खूझि जरत ३ वासुदेव के नामहि से गति लोक वेद सबही की संमति । सुगम उपाय न कौड़ी लागै को असि बूझि धरत ४ ॥

वार्त्ता । किसी राजा ने एक उत्तम महल बनवाया और विचित्र चित्रकारी रचाया और बिछौने नरम और सब पदार्थ सुख देनेवाले उसमें एकत्र किये । राजा ने गृहप्रवेश का उत्सव किया । फ़क़ीर अमीर भांति २ के लोग आये । राजा बोला कि कोई किसी रीति का दोष इसमें देखै तो निडर हो

कहै । उसको हजार अशरफी का तोड़ा मिलैगा । लोगों ने सब ओर देखा पर कुछ दोष न पाया । उसी समय एक फ़क़ीर आया । एक पल उस विचित्र भवन को देख रोदिया और कहा कि इस मकान में दो बड़े दोष हैं । एक यह कि एक दिन यह महल गिर जायगा दूसरे यह कि मालिक इस मकान का मरैगा इतना कह इस पद को पढ़ा ॥

पद । दिवाने तैं सियवरसों नहिं सटा कहा बढ़ाये शिरजटा । मोती झालर रतनखम्भ से विरची ऊंची अटा । एक दिवस तू इनको तजिकै जावैगा चटपटा १ कहा भये कुल कटा भये से कहा भये कनफटा । राम राम रटि जो नहिं बंदे परमारथ रस चटा २ ज्ञान सीखके आप ब्रह्मभा विषयन से नहिं हटा । छिन ऊपर छिन नीचे दौरत जैसे नटको बटा ३ इन्द्रादिक देवन में जाकी रती रती की छटा । ताको निरखि मोर मन हरपत जस सावन घनघटा ४ ॥

वार्ता । राजा को इस पद के सुनने से वैराग्य हुआ और कहा कि कुछ और उपदेश दीजिये फ़क़ीर बोला ॥

पद । कौनी निंदिया सोयरहेउ अब जागहु जियरा । तीन पहर तौ सोवत बीते चौथो काहे खोय रहेउ १ जग भोगी तस्कर योगिन को निशा भाग अस होय रहेउ । चारि पहर में चारिउ जागहिं तू कस अनरथ बोय रहेउ २ सूखहाड़ से इन विषयन में रस कूकरसों टोय रहेउ । काम क्रोध मदमोह लोभको नाहक बोझा ढोय रहेउ ३ श्रुति वचनन से जागा तब मल देवनदी में धोय रहेउ । सीतारामचरण रति उपजी हरिगुण माला पोय रहेउ ४ ॥

वार्ता । एक राजा के विश्रामथल में किसी भाँति से फ़क़ीर गया । मन में विचारा कि राजों की शय्या पर सोने से कितना सुख होता है । इस अनुभव के लिये सोया । उसी बेला राजा आया । दूसरे को सोते देख पहिले घबराया, फिर जाना कि कोई बावला है । सेवकों को आज्ञा दी कि इसे पलङ्ग से खींच लो । वैसाही किया । पहिले रोया फिर हँसा । राजा बोला भला चोट लगने से तो तू रोया हँसा क्यों ? बोला कि पलभर

सोने के लिये मेरे इतने कोड़े लगे और जो नित सोता है उसको क्या जानें क्या हो। राजा सुन पांव पड़ा, कहा कि क्षमा कीजिये और कुछ सिखलाइये। फ़क़ीर बोला॥

पद। भजत कस नाहीं यदुरैया। कंचन पलँग बिछौना गुलगुल तकिया और दुलैया। ताहूपरगलत कियाचाही भजनेमें रोगदैया १ तीनबेर खायेके चाही मिसिरी दूध मलैया। अतर मलै भजने की बेरिया आलस औ जमुहैया २ खेलत खात तीन पन बीते पहुँचलि आय बुढ़ैया। आय अचानक काल गरासिहि केउ न करिहि सहैया ३ देवतन के मिस आप खात है द्विजसे करत लरैया। श्याम रंग में कबहुँ न आवत छोड़ि कपट चतुरैया ४॥

पद। जरि जाउ जगत को अस जीवन। जेहि जीवन में तजि उत्तमरस चहत अधररसको पीवन १ बैठि कुसंगति सीखि गये हैं कपट गुदरिया को सीवन। परमारथ की गति नहिं जानी बूझि गयो

अंतर दीवन २ षटरस भोजन खाइ मोटाने सहित दूध माखन घीवन । पायो नहिं संतोष अमियरस मिला न सतसंगति तीवन ३ घिनिउ न आई हाय विषयरस चाटि रहे जैसे ठीवन । वासुदेवको नामै तारक जाकी महिमा की सींव न ४ ॥

वार्ता । एक समय राजाने फ़क़ीर से कहा कि हमको उपदेश करो । फ़क़ीर जलका बरतन लाया और कहा जो प्यास तुझ पर प्रबल हो और इसके सिवाय जल न पावै और इसको बेचता हो तो कितने को मोल ले, कहा अपने आधे राजपर । कहा वह प्यास अधिक हो तो क्या करै ? कहा उसके दूसरे आधेपर । कहा जो वस्तु दो घूँटकी बराबरी करै उसकी क्या बड़ाई ? फिर राजाने कहा कि जिसमें विवेक हो सो कृपा करि कहिये फ़क़ीर बोला सुनो ॥

पद । समुझि बूझ जियमें बन्दे क्या करना है क्या करता है । गुणका मालिक आपै बनता दोष राम पर धरता है १ अपना धरम छोड़ि औरों के ओछे धरम पकरता है । अजब नशे की ग़फ़लत

आई साहब को नहिं डरता है २ जिनके खातिर जानमाल से वहि वहि कै तू मरता है। वे क्या तेरे काम पड़ेंगे उनका लहना भरता है ३ देव धरम चाहैं सो करले आवागमन न टरता है। प्यारे केवल रामनाम से तेरा मतलब सरता है ४ ॥

वार्ता। एक राजा ने फ़क़ीर से कहा कि रात हमने स्वप्न देखा कि अमृत कोई मुझे देता था पर मैंने न लिया। फ़क़ीर ने कहा कि तुम बहुत भूले राजा बोला कि भूल की कौन बात है स्वप्न की बात तो झूठी होती है क्योंकि ठिकाना उसका नहीं होता फ़क़ीर हँसा कहा कि इस राज्य का कौन ठिकाना है कि जिसमें रात दिन पच मरते हो ॥

पद। किसने तुझे भुलाया किस बात में भुला तू। पानी में ज्यों बताशा त्यों पाइ क्या घुला तू ॥ बचपन गया जवानी जातीचली हरिन सी। बाघिन बुढ़ाई आई इसके परेखता है १ दोनों बगल के खांगे शिर पर पड़ैंगी तेरे। मुरछल

सिखावता यों तू चेतिजा भोरे ३ दीये मों तेल दम दम छीजै पड़ै ना मालुम । त्यों देह छीजता है तू चेत जान जालिम ३ केते भये गये भी जिनके निशानबाजे । तू मान्न है दिखाने क्या झूठ साज साजे ४ ॥

वार्ता । फिर राजा ने चरणों पड़ कहा कि मेरे कृतार्थ हेतु कोई भजन कहिये फकीर बोला ॥

पद । सतगुरु पूरा जो मिलै गुण रंग लहो । लगन लगै सियराम से जग मंगल हो १ ब्रह्मज्ञान है फूलसों गुण रंग लहो । फल सनेह जो राम से जग मंगल हो २ साधु हमारा जीव है गुण रंग लहो । काम नहीं धन धाम से जग मंगल हो ३ जीवन है सत संग से गुण रंग लहो । सो न बनिहि अकसाम से जग मंगल हो ४ जो न भयो जन रामको गुण रंग लहो । कुछ न बनो नर चाम से जग मंगल हो ५ का श्रुति पेड़न को

मनो गुण रंग लहो । काम तुमहिं है आम से जग मंगल हो ६ शिर पर सीताराम जो गुण रंगलहो। डर न विधातावामसे जगमंगल हो ७ आठोयाम रसलूटिये गुणरंगलहो । देवरूप घनश्याम से जग-मंगल हो ८ ॥

वार्ता । एक फ़क़ीर किसी वन में मन में भजन करता था उसके पास एक राजा आया बैठके चरण में शिर झुकाया कहा जो आज्ञा दो सो करूं फ़क़ीर न बोला तब राजाने कहा आप धन्य हैं कि जगत् को लातमारा है फ़क़ीर मुनि के हँसा और कहा कि हमसे धन्य तो तू है कि परलोक को लातमारता है फिर राजा ने चरणों पड़ कहा कि कुछ उपदेश कीजे फ़क़ीर ने कहा ॥

पद । तीन आशा जगत में झूठीवे । सीखकी-मियादौलतखोई खाक लगी भरिमूठीवे । जद्द-मादको बेटामानै आखिर रूठारूठीवे । भजहिं भूत तजि वासुदेवपद चाटत पतरीजूठीवे ॥

वार्ता । एक राजा अपने अन्तःपुर में बैठा था एक फ़क़ीर किसी रीति से वहां पहुँचा सेवकों ने नया जान डाट दपट

को फ़क़ीर बोला मुझसे क्या बिगड़ा क्यों मारते पीटते हो सेवक बोले, इससे कौन बड़ा अपराध होगा कि राजा के मकान में निडर चला आया। क्या किसी ने बुलाया था, फ़क़ीर ने कहा कि मैं पथिक हूं और यह धर्मशाला है, क्षमा कीजै थोड़ी देर जो ठहरा फिर अपनी राह लूंगा सेवक बोले कि ये डर होके ऐसे राजा के मकान को धर्मशाला कहता है। फ़क़ीर बोला कि इस राजा के पहिले इसमें कौन रहता था, बोले कि राजा का बाप, पूछा कि उसके पहिले कौन? कहा कि राजा का दादा, इसी भांति से राजा के बड़े लोग रहते थे। फ़क़ीर ने कहा कि हमने क्या झूठ कहा, जिस घर में सदा एक का क़ाबू नहीं कभी कोई कभी कोई कुछ दिन ठहरा वह गया दूसरा आया उसने कूच किया फिर कोई आया धर्मशाला नहीं तो क्या है? यह बात राजा सुनके चरणों पर गिर कहने लगा हमको कुछ उपदेश कर सनाथ कीजिये। फ़क़ीर बोला सुनो॥

पद। तीनि राति जीवनपर तब कहाँ आराम है। मोह राति महाराति कालरातिनाम है १ जन्महोत गर्भज्ञान बिसरो सुखधाम है। मोहराति भई लाग मायाको काम है २ बड़े सुखैमहाराति जामेंबहुदाम

है। जाको परवाहनमें बहो जात ग्राम है ३ मरण समय कालराति फेरि जनम आम है। रामचरण चिन्तन ते पावत विश्राम है ४ ॥

वार्त्ता। एक राजा ऐश्वर्यवान् और विद्या में परम सुजान था पर प्रजा उसकी उससे पीड़ित रहती थी, और आह के मारे रात दिन मरती थी ऊपर से राजा पूजापाठ में लगा रहता और काम पड़े पर लोगों से दगा करता था एक दिन उसके रहनेवाले मकान के छत पर रातको दो सिद्ध आये और चारों तरफ़ दौड़ने लगे राजा पांव की धमक पाके उनके पास गया पूछा कौन हो क्या करते हो सिद्ध बोले आदमी हैं बाघको ढूँढते हैं राजा बोला तुम लोग बावले तो नहीं हो। क्या मकान के छत पर भी बाघ रहता है सिद्ध बोले बावले नहीं हैं बावला तू है कि व्यवहार में पड़ा है और ईश्वर को ढूँढता है और यह पद पढ़ा ॥

पद। मन संशय हिंडोले पर विहरत। छिन दुनियां छिन में परमारथ एको में नाहीं ठहरत १ दुनियां में रहिकै केते नर परमारथहू में सोहरत। जगा विषय परमारथ विसरा हायहाय कहिकै कहरत २ कहां विषयरस कहँ परमारथ दूनों साधत

डोलदहरत । योगी दुनियां छोड़ि छांड़िकै परमारथ पथमें ठहरत ३ देवनको को पूजै फिरि फिरि ब्रजरजहीं में जिय लहरत । श्याम लगन ते दूनों लखिहैं अस श्रुति की नौबत भहरत ४ ॥

वार्ता । फिर इस पद को पढ़ा ॥

पद । यारो नेकी अब करना आखिर को है मरना । धन यौवन के जुलुम जोम से पता नहीं उबरना । कभी जाल में फँस जावेगा ज्यों जंगल का हरना १ गनी गरीबों को हक नाहक ऐसा नहीं रगरना । दो दिनकी हशमत यह तेरी साहब को कुछ डरना २ कुफुरकरै अधरमकी दौलत गसल बांस का फरना । अभी तुझे मालुम नहिं पड़ता अन्त पड़ेगा भरना ३ जानि बूझि टेढ़े रस्ते में बंदे कदम न धरना । देव देव कहि राम राम रटि भवसागर को तरना ४ ॥

वार्ता । इस पद के सुनतेही राजा डरके चरणों पड़ा कहने

की फ़क़ीर बोला मुझसे क्या बिगड़ा क्यों मारते पीटते हो सेवक बोले, इससे कौन बड़ा अपराध होगा कि राजा के मकान में निडर चला आया। क्या किसी ने बुलाया था, फ़क़ीर ने कहा कि मैं पथिक हूं और यह धर्मशाला है, क्षमा कीजे थोड़ी देर जी बहला फिर अपनी राह लूंगा सेवक बोले कि रे डर होके ऐसे राजा के मकान को धर्मशाला कहता है। फ़क़ीर बोला कि इस राजा के पहिले इसमें कौन रहता था, बोले कि राजा का बाप, पूछा कि उसके पहिले कौन? कहा कि राजा का दादा, इसी रीति से राजा के बड़े लोग रहते थे। फ़क़ीर ने कहा कि हमने क्या झूठ कहा, जिस घर में सदा एक का क़ाबू नहीं कभी कोई कभी कोई कुछ दिन ठहरा वह गया दूसरा आया उसने कूच किया फिर कोई आया धर्मशाला नहीं तो क्या है? यह बात राजा सुनके चरणों पर गिर कहने लगा हमको कुछ उपदेश कर सनाथ कीजिये। फ़क़ीर बोला सुनो॥

पद। तीनि राति जीवनपर तब कहाँ आराम है। मोह राति महाराति कालरातिनाम है १ जन्महोत गर्भ ज्ञान बिसरो सुखधाम है। मोहराति भई लाग मायाको काम है २ बड़े सुखैमहाराति जामेंबहुदाम

पद । मत भूलरे खुदा की अब याद दम बदम कर । नेकी सवाब करले आज़ाब फंद सों डर १ तू रंज पावता है जो जो करम हुये से । सो सो न कर किसी पर इस राहमें कदम धर २ जो नेक बद जनावै हरदम सभी के अंदर । क्यों ना परेखता है उस नूर को सरासर ३ उसही कि रोशनी से रोशन जहाँ बना है । तिस देवसों सिनासी करना ज़रूरहै नर ४ ॥

वार्ता । एक राजा ने फ़क़ीर से कहा हमको ज्ञान भक्तिबहुत पंडितों ने सिखाया पर कुछ न आया फ़क़ीर बोला कि एक ब्राह्मण का पुत्र मिठाई बहुत खाता था घर में जो कुछ पाता उसकी मिठाई खाता उससे विप्र ने बहुत दुःखी हो उसके गुरु से कहा आप मना करदें तो लड़का मिठाई खाना छोड़दे गुरु ने कहा एक महीने बाद मना करदूंगा वैसाही किया उसने मिठाई खाना छोड़ दिया ब्राह्मण ने पूछा आप उसी दिन मना करते तो दो चार रुपये मेरे और भी बच जाते गुरु बोले कि उन दिनों में मैं भी गुड़ खाता था इस कहानी की जान यह है जो आप फँसा है वह दूसरे को कैसे निकाल सकेगा इन दिनों ऐसे लोग बहुत हैं चेतावने के लिये इस पदको लिखा है ॥

पद। मैं तो मनहीं मनहीं मन पछिताइ रह्यो। साज-समाज सरस पाइउकै करसे रतन गँवाइ रह्यो १ यह नरतन यह काशी उत्तम कछु सतसंगौ पाइ रह्यो। पढ़ो गुनो सिखयो औरनको आप विषय लपटाइ रह्यो २ चित्रविचित्र करमको धागा जनम जनम अरुझाइ रह्यो। काहे को कबहूं यह सुरझिहि दिनदिन अधिक फँसाइ रह्यो ३ सदा-सुक्तको ज्ञान अगमलखि गले हार पहिराइ रह्यो। शिवकोसूत शिवहिसे सुरझै बिनती देव सुनाइ रह्यो ४॥

वार्ता। इतना सुनि राजा ने चरणों पड़ कहा अपने ज्ञान-रूपी सूर्य से मेरे अज्ञान अँधेरे को हरिये फ़क़ीर बोला॥

पद। अब राम से नेहड़ा लगायलेरे। कुछ दिन सतसंगति को करिकै अंतर ज्योति जगाय लेरे १ इन्द्रिन को मन के तावे रख मन में रस उमगाय लेरे। देवल को भी रामरंग से बंदे खूब रँगायलेरे २॥

वार्ता । एक राजा ने एक नगर को जीता और वहां के भले लोगों से पूछा यहां के पुराने राजाओं के वंश में भी कोई है लोगों ने कहा एक है श्मशान में रहता है राजा ने उसको बुलाया वह नहीं आया आप उसके देखने को गया, पूछा क्या सबब है जो यहां रहते हो उसने कहा कि मैं चाहता था कि राजा प्रजा की हड्डियों में निर्णय करूं पर सब की बराबर देखीं राजा ने कहा कि तू जो चाहे सो दूं उसने कहा मेरी चाह तो वही है पूछा क्या ? कहा वह जीना जिसके साथ मरना न हो और वह जवानी जिसके साथ बुढ़ापा न हो और वह संपत्ति जिसके साथ विपत्ति न हो और वह प्रसन्नता जिसके साथ उदासी न हो और वह आराम जिसके साथ रोग न हो, राजा ने कहा कि यह तो मेरे पास नहीं है उसने कहा यह जिसके पास है उसी से मांगता हूं और मै मांगता भी हो नहीं, इस पद को पढ़ा ॥

पद । अगतिन की गति श्याम नहीं जग में कोउ दूसर । सुधरे को तो सब कोउ चाहत वह चाहब केहि काम बिगरे को चाहै सोइ चाहब होत जगत सरनाम मसल है गोबर ऊसर १ वेद पाठ तोहिं तार सकत नाहिं अन्त होइगो वाम विपति

परे पर काम न आवै जैसे नमकहराम जाइ तजि जस घमधूसर २ हँसि हँसि पापी पाप करतपै नाहिं सोचत परिणाम बड़ो दण्ड यमराज देइँगे उकिल जाहिंगे चाम जस धान पर घमकत मूसर ३ केहि गिनती में लकुट मिलत जो बिन कौड़ी बिन दाम देवकि सुत ऐसे को चाहत हरदम आठोयाम पतित तो खासर खूसर ४॥

वार्ता। एक बादशाह विजय करने के लिये अपने नगर से चला विजय करते करते कई हजार कोस तक गया वहां उसको संग्रहणी का रोग हुआ वैद्यों ने बहुत दवा की कुछ काम न आई जो सब वैद्यों में बड़ा था वह राजा को नदीतट ले गया एक पुड़िया को बीच नदी में छोड़ा छोड़तेही वहां की धारा बंद होगई वैद्य ने कहा कृपानिधान दवा का जोर तो यहां तक है पर क़िसमत पर चारा नहीं बादशाह कहने लगा बेटे से कुछ कहना था लाचार हूं यहां नहीं है तुम लोग मेरे मर जाने के बाद धरती में सारा बदन गाड़ना हाथ को ऊपर छोड़ना इतना कह मरगया लोगों ने वैसाही किया फिर उस नगर को सब गये उसके बेटे ने पूछा कुछ हमको भी सिखा-

वन के लिये कहाथा, कहा अफसोस क्योंकि–कुछ उपदेश लड़के को न करने पाया और कहा कि बाद मरजाने के हाथ छोड़ सारे बदन को गाड़ना लड़का बोला कि हमारे उपदेश के लिये ऐसा कहा इसका भेद यह है कि सारी पृथ्वी का राज्य हमने किया पर अंत में कुछ काम नहीं आया सब कोई देखलो कि खाली हाथ जाता हूं इतना कह इस पद को पढ़ते जंगल की राहली ॥

पद । जेहि लागै सोइ जानै सियाराम लगनियां । बिना सुधारस चाखे कोइ कैसे कहो बखानै । चीखत तो गूंगो ह्वै रहि हैं जीवत मृतक समानै १ बादशाह की क्या गिनती है इन्द्रहु को नाहिं मानै । ब्रह्मादिक कछु माल नहीं हैं खुद स्वरूप पहिचानै २ जिनहिं लगी तिन पीछे न ताका जाय धसे मैदानै । सम्मुख समर काल को जीता बाजत विजय निशानै ३ रामराम रटि मुदित होत जस देव सुधाकरि पानै । राम लगन आपुइ लागत है बदिन को जिनि छानै ४ ॥

वार्ता। एक महात्मा से एक ने कहा मुझको छोड़ने और लेने की वातें सिखाओ महात्मा ने कहा एक पण्डित ने बेटे से कहा चारसौ ऋषीश्वरों की सेवा किया कर उनकी बातों से आठ बातें लिया कर जब तक पूजा कर मनकी तरफ़ डीठ धर जब तू और लोगों में हो अपनी जीभ को देख और जब और के घर में हो तो आंखों को परख जब भोजन कर अपने कंठे को देख दो बातें याद रखने की हैं और दो भूलने की। ईश्वर और मरना, याद रख और अपनी नेकी दूसरे की बदी भूल जा सच तो इस पद में है॥

पद। और लगन केहि कामकी आछी श्याम की लगन है। सरग लगन से हो मत पढ़ि पढ़ि वाणी ऋगयजु सामकी चारि दिना में गिरत सरग से अरुचि भई सुरधाम की जस कविता अगन है १ सुर वेश्यन से लगन लगाई खरच न करितप दामकी लात मारिकै वह तौ सरकी बिछुरी चकती चामकी तब फिरत नगन है २ यामें तौ छिन छिन मन हरषत केवल गरज न नामकी रूपसिंधु में मज्जन करिकै फिकिरि न आठौ यामकी जन प्रेम

लगन है ३ यह रसनहार दैनदिन आस न दाहिन
वाहकी तुमसे नाम भजन नहीं छूटत ज्यों गरीब
को आमकी हिय ज्योति लगन है ४ ॥

वार्ता । एक राजा एक फकीर का बड़ा नाम सुन उसके मिलन को चला रीत में राह बहुत बिगड़ी थी वहां जब राजा गया मुँह ढांक लिया इस बात को फकीर ने जाना जब राजा फकीर के पास आया फकीर ने बहुत आदर भाव किया और कहा जिस लिये आपका आना हुआ हो उसको आज्ञा कीजै राजा बोला कि आपका काल किस भांति भजन में कटा है कहिये फकीर बोला ॥

पद । कबहुँ न सियवर के गुण गाये । झूठी आशा में फँसि फँसि के बिरथा जन्म गँवाये १
धनवन्तन को देखि लोभवश निज स्वरूप बिसराये ।
कूकुर सों टुकरा के कारण पुनि पुनि पूंछ हिलाये २
खेलत खात हँसत औ बोलत चौथे पन नियराये ।
बीसौ बिस्वा मरण होइगो कानि हुके नाराये ३
श्रीगुरु दया संग संतन को इनके बिना सहाये ।

देवचरण रति कैसे उपजै साधेहु कोटि उपाये ४ ॥

वार्ता । राजा बोला यह पद आपने हमारे उपदेश हेतु कहा बड़े लोग अपनी बड़ाई नहीं करते अपने ऊपर दोष रख और को उपदेश करते हैं मैं यह मांगता हूं कि एक बार चलकर मेरे घर को पवित्र कीजिये फ़क़ीर ने कहा बहुत अच्छा राजा ने अपने हाथी पर चढ़ा लिया और वहां से मकान को चला जब आया सिंहासन पर जा बैठा फ़कीर को भी बिठाया फ़क़ीर ने नाक बंद की राजा ने हाथ जोड़कर कहा कि यहां तो अतर गुलाब की सुगन्ध आती है आपने नाक किस लिये बंद की है फ़क़ीर बोला जैसे तुमको हाथी पर दुर्गन्धि आई उसी भांति रुपये की दुर्गन्धि हमको यहां आती है यह कहा ॥

पद । लगन मैं कासों राम लगावों कोइ दिलदार न पावों ॥ चौदह अनरथ देखि अरथ में तासे मनहिं हटावों । रहउ कि जाउ अरथ किसमत से हरष न शोच बढ़ावों १ अशन बसन भूषन भोगन से छिन छिन तियहिं बुझावों । इन बिनु कामिनि बात न पूछै अपनो भरम गँवावों २

अतर सुगन्ध देउँ जेहि तनको नित मलिमलि नहवावों। सोऊ संग चले नहिं मेरे अब प्रिय केहि ठहरावों ३ जाके नाते सब प्रिय लागत जा विनु मृतक कहावों। सोई देव सियावर मेरो ताको गाय रिझावों ४ ॥

वार्ता। राजा ने इस पद को सुन कहा मेरे भलाई को और कुछ उपदेश दीजिये फ़क़ीर बोला ॥

पद। बंदे श्यामचरण से लाग जो तू लागि सकै ॥ मोह नींद में सोवत बीते युग युग अजहूं जाग। झूठ कपट चतुराई निंदा वद करमन से भाग जो तू भागिसकै १ जिन चरणन को शुक मुनि सेवत साधि ज्ञान वैराग। जिनसें श्रीगंगा जू लहरत वाही रसमें पाग जो तू पागिसकै २ यदपि विषयरस प्यारे तदपि अंत लागेगा दाग। काजर की कोठरी से मैले अस विचारि कर त्याग जो तू त्यागिसकै ३ सुखही के कारण सब दौरत मिलै न

सो सुख ताग । देवकिनंदन के पांयन में नित वसन्त नित फाग जो तू फागिसकै ४ ॥

वार्ता । एक राजा ने एक महात्मा के पास जा शिर झुका कहा मेरे पर कृपाकर काम क्रोध लोभ मोह मद मत्सर का रूप बतलाइये महात्मा बोले कि कामका रूप इस पद में है सुनो ॥

पद । नचत हैं काम सजि साज ॥ श्याम स्वरूप कुसुंभा वागा फूलन के धनु बाण । दूनों राह चलाइ मगन मन साखी रति ऋतुराज १ चैत चांदनी निरमल छिटकी महकि रही फुलवारी । लाल पलंग कसे कंचन के लूटि रही भय लाज २ योगी यती पतिव्रत नारिन खोजि खोजि कै लूटै । ब्रह्मचर्य पर ऐसो झपटै मनहुं कबूतर बाज ३ जीत नगारा बाजि रह्यो है तीन लोक में जाको । देव देवकी भौंह देखि कै करत सोई सब काज ४ ॥

क्रोध का स्वरूप—पद । अग्नि सों कोप

धधकत ॥ लाल नयन अति भौंह गँठीली फरकत दूनों ओठ। करु वचन आहुति के परतै सहस गुणा भभकत १ माता पिता गुरु अपुनौके काटत विलँब न लावै मानहुँ ग्रह पिशाच चढ़ा शिर बिन विचार झभकत २ तनिक न करुणा मनयें आवै छाइ रही अँधियारी। तीनिलोक के परलय करिकै हहरि हहरि हहकत ३ हिंसा नारी संगे जाके श्यामरूप पटगहने। देखेह को नयन ती-सरो अस डंका गहकत ४ ॥

लोभ का रूप—पद। लोभना नट खेलहि रचत ॥ आशा की डोरिनसे बाँधे बंदर और बँदरिया। मतलब की डुगडुगी बजावै दूनों नाच नचत १ तृष्णा नारी साथै नाचत जेहि कर आदि न अंत। साधक दम्भ साज सब साजै पूरे रंग मचत २ जेहि से तेहि से दाँत निपोरे नजर भई ले बड़ि छोटी। दाता सुनलै छाती पीटे केहु नाहिं बचत ३

योगी जपी तपी संन्यासी सबको नाच नचावै।
महादेव के चरण शरण में कोऊ भागि बचत ४॥

मोहका रूप—पद। नचत शिवद्वारे पर मोह॥
कारो जसि भादौं की रजनी मिथ्या मति तिय
संग। भूत पिटा इनमें त्रिभुवनके नित उपजावत
छोह १ साधन सामग्री वड़िझीनी भ्रमवह पकरि न
जाय। महा अविद्या कारण एकर केऊ मानत कोह २
बुद्धिहि से व्यवहार बनत सब तेहि में मोह मवास।
सतसंगति पारस के परसत सुधरत मति जसलोह ३
झीनो रूप ज्ञानको यह है तिमिर तेजको जैसे।
इहई तामस देव कहावत जेकरि मिलत न टोह ४॥

मदका रूप—पद। महामद झूमत अकरि॥ मत-
वारे हाथी की नाईं काहू को नाहिं मानै। धन यौवन
गुण की वाई से कैसे परत न पकरि १ राग द्वेष
याही सों उपजत औरौ कइउ कलेश। है नीचो
अति ऊंचो पनकी मैल रही है जकरि २ बड़ से

छोटकरे जे माया सेई है जरियाकी । संग लेइ सहा-
रिनि तिरिया नाचै छकरि छकरि ३ महारुद्र जेकरि
हैं देवता जेकरे बल जग ठाढ़ । ऊस्वरूप जो पूरण
पावै तौ मल बोलै हँकरि ४ ॥

मत्सरस्वरूप—पद । वृथा मद धारी यह बकत ॥
आपने में करतूति न एकौ पर सुख देखि जरै ।
उज्ज्वल कपिला के दूधौ के दोष नजरि से तकत १
इरषा तिरिया मुँह लागी है जानेसि बक बक सार ।
लोग हँसें समुझै नाहिं मूरख मारि खाइ के छकत २
मद बलही ते सरत यहीते मत्सर नाम कहावै ।
गनी गरीब छोड़िकै जेके केऊ नीक न आँकत ३
देवदेव की प्रभुता लखिकै जिनहिं गरीबी आई ।
बिन प्रयास या मत्सर खलको शल जीतते सकत ४॥

वार्ता । फिर राजा महात्मा के चरणों पड़ा दो सहस्र अश-
रफी आगे रक्खीं फ़क़ीर ने महुये के रोटी का टुकड़ा राजा के
हाथ में दिया कहा कि परसादी है खा जा राजा खाने लगा

खा नहीं सका गले में अटका किसी भांति पानी से नीचे उतरा राजा से बोला इसी भांति ये अशरफ़ी भी मेरे गले में खटकती हैं राजा ने कहा कृपाकर कुछ परमारथ उपदेशिये जिससे मेरा भला हो फ़क़ीर बोला ॥

पद। जिस राह से चला तू तिस राहमें खता है। गिलकार कामकच्चा मज़बूत रेखता है १ खुशरंग की जवानी किसकी सदा रही है। आफ़ताबका बुढ़ापा क्या तू न देखता है २ एती बड़ी ग़रूरत दिल में समा रही है। बन्दे नहीं किसीको कुछ चीज़ लेखताहै ३ जिसने कि इल्म पाया तिसने बहुत छिपाया। यह चाल देवतों की सोभी दुले-खता है ४ ॥

वार्ता। किसी राजा ने संत से पूछा किसी समय हमको भी याद करते हो, सन्त बोला, जब श्रीरघुनाथ को भूलता हूँ राजा ने कहा हमको भी जिसमें सदा ईश्वर याद रहै ऐसा कुछ बतलाइये सन्त बोले ॥

पद। सिय राम उपासक के पूरे। तिनके चरण

कमलरज बन्दैं जिनते सुधरत दोउकूरे। जिनके हियसे गई कचाईज्यों बलके भांखर भूरे। शेखी को अँकुरउ न जामा होइरहे वहसीघूरे १ आगत जे निंदित कर्मन से परमारथपथ में शूरे। नाम-परायन जगहितकारी बाजत अम जिनके तूरे २ केवल भक्तिप्रतापहि के बल यमगण के जिन मुँह थूरे। जिनके आंखन रामरंगके चमचम चमकि रहे नूरे ३ जप तप योग साधि का होइहि दुरगम ज्ञानरहौ दूरे। देवदेव मो कहँ अब कीजै इनके पांयन के धूरे ४॥

वार्ता। एक ब्राह्मण ने एक महात्मा के पास जा शिर झुकाय पूछा महाराज कोई मंत्र हमको ऐसा बतलाइये समुद्र तक का राजा हो सुख से बहुत अनाज कपड़ा धरिकै भजन करौं कोई पदार्थ ढूँढना न पड़ै महात्मा बोले कि ब्राह्मण का धन तो ब्रह्मविद्या है और इस धन में जो दुःखदर्शी दुःख है—क्या राजा लोग सुखी रहते हैं वे तो रात दिन मुल्क माल गाड़ी लड़के के जाल में फँसे रहते हैं भांति भांति के शोच में पड़ी करती

कुछ हाथ नहीं आता अंत अकेला जाता है और प्रसिद्ध है (सहस्रबाहु दशवदन आदि नृप बचे न काल बली ते) औ ते घरिखाये काल जो इन्द्रहि डाटते भले लोगों की यह कहनि है कल के लिये भी कुछ रखना न चाहिये कल क्या प्रभु चला जायगा और पहिनने के लिये एक वस्त्र बहुत है शोचने की बात है कि पेट भर जैसा तुम खाते पहिनते हो वैसाही राजा भी खाते पहिनते हैं हां इतना अधिक है देश कोप के चिन्ता में डूबे रहते हैं तुम तो निश्चिन्त सोते हो और सुखकी बात तो और है ॥

पद। विषयो नहिं पहिचाना बिरथै लपटाना ॥
विषय किये सुख होत सही पै तैं कारण का जाना १
अंगन में सब भाव भये ते मन बहुरत बहिराना।
सो सुख विषयन से आपत है यह केवल अज्ञाना २
चिन्ता में न विषय सुखदायी इहिते करु अनुमाना।
मन थिर तैसे सुख उपजत है मन बटोरु नादाना ३
थिर मनमें रामैं झलकत हैं जलमें मुखजमभाना।
सुखस्वरूप देवेको सुखकन्द विषयनमें छितिराना ४।

वार्ता। ब्राह्मण ने हाथ जोड़ कहा आपकी कृपा से धन

को चाह गई अब कृपाकर मोहनदी का रूप और पार होने का उपाय कहिये महात्मा बोले ॥

पद । बाढ़ति पापिनि नदियाहो घेघोर करार। अगम पापजलपूरण दृश्यवार न पार १ चादरि अँवरक चरिया हो खल संगखुआर । बरबस धरि धरि बोरै दुरमति जहँ खरधार २ तामें जन्तु भयावन कामादिक परिवार । पावन बिरवन करकैं मूल उखार पखार ३ संचित गिरिसे निसरी पायसि सन्कैदार । दुरगति सागरसे मिली दुखही जहँ सार ४ हावर नीर भयंकर लागत बड़ खार । तहँ सब जीव मछरिया सुख से करत विहार ५ महामोहकै कटिया तामें विषय अहार । काल कुभाबल मारत नित यह रोजगार ६ चादरि भइ भटभैली कबहुँ न भयल पखार । रामरंग कस लागै निरमल जन शृंगार ७ चढ़इ जो भक्ति नवरिया केवल नाथ अधार । सतगुरु देव मल्लहवा तौ करइ उधार ८ ॥

वार्ता । ब्राह्मण ने फिर कहा कि कृपानिधान हमको नाटक सुनने की बहुत अभिलाष है सुनाइये मोह संशय सब हरिये महात्मा सुनके बहुत प्रसन्न हुये इन पदों को सुनाये ॥

पद । भवसागर के पार बड़ मोह बसत है ॥ इन्द्री मति तक भवसागर है आगे जीवन को बाग रहै । महामोह सब से आगर है रवि शशि को बटपार जस राहु ग्रसत है १ ज्ञान विरागादिक तेइ साधन तापर रामचरण आराधन । जामें रहै न तनिको बाधन तब मारै हंकार जामें जीव फँसत है २ आपन पूरण रूप निहारै प्रबल कामको रणमें मारै । रामरूप में मोहहि डारै तब पावै सुखसार फिर नाहिं खसत है ३ यह उपाय तो बड़ो अगम है देवराजहू को न सुगम है । सुगम एक मति कहत निगम है राम नाम आधार यह जिय में धसत है ४ ॥

पद । शूर अकंपन हनूमन्त छल विराग से भइ

खड़ंत ॥ आनि ओर है मनकी ठौर बचन कहत और और । बनति झुठाई ठौर ठौर कपटी आपनि करत चौर १ विमल आत्मा जगमगात कपट किहे ते वह छिपात । दिन दिन परदा परत जात कपट नाम को यही नात २ हारि जात नर करि उपाय कपट न तजिकौ यह कँपाय । सोइ अकंपन पद कहाय त्रैलोक्य विजय जो रहा पाय ३ जब लगि नहिं आवत दृढ़ विराग तब लगि याके शिर रहति पाग । हनुमन्त सीत कहँ मिले आग जय जय देवन में सुयश जाग ४ ॥

पद । कुंभकर्ण हंकार राम गरब प्रहारी ॥ जाको छुअत गिरत ब्रह्मादिक ज्ञानौ होत असार । परब्रह्महू निर्गुण भासा लगत अकार हकार १ सीधा उँचाई भुजबल औ हठ पदसों पदगति इच्छाचार । सबको दुखदायक अति निरभय अंग अंग अपकार २ राम प्रथम ताके भुज काटे तब शिर काटि पँवार ।

पद काटे तबहूं धड़ दौरत डारी सिंधु मँझार ३ तजै उँचाई मान मरै तब धरिये दीन विहार। देव मुदित श्रीरामचन्द्र वर वरसत सुमन अपार ४ ॥

पद । इन्द्रजीत है काम जो सबहिं सतावत ॥ छपि कै मारत परगट मारत बीरन में सरनाम । जाको नाम सुनतही कांपत ब्रह्मादिक सुरधाम मुनि ब्रतहिं नशावत १ ज्ञानी योगी वैरागिनको मोललेत बिनुदाम । ज्ञान ध्यान सब बिसरि जात हैं चमकत आछो चाम तब नाच नचावत २ लषण यती जाहिर हनुमन्तौ ब्रह्मचर्य विश्राम । काम शत्रु इनहीं को पठवा कामहतन को राम तब भा मन-भावत ३ इन्द्रजीत कल छल करि हारा लच्मण एक वाण ते मारा । वाजि रहाहै देव नगारा मिटा जगतको घाम लागे गुण गावत ४ ॥

वार्ता । एक महात्मा वेष छिपाये बावले से फिरते थे एक दिन एक साहूकार पार उतरने के लिये नाव पर चढ़ा उस

पर फ़क़ीर भी चढ़ा साहु के लोग मार मार करनेलगे किसी बुद्धिमान् ने कहा तुम लोगों का क्या बिगड़ता है बैठने दो साधु बैठ गया उसी घड़ी एक भांड़ आया साहु के सम्मुख कौतुक करने लगा अपने जूते को साधु के शिर पर पोंछा लोग हँस पड़े उसी समय फ़क़ीर को साहु ने पहिंचाना कहा आप तो फलाने देश के राजा हैं, पदार्थ बेचने के लिये आपके पास गया था मुझपर बहुत कृपा की और सारे पदार्थों को ख़रीद लिया आज मुझसे बड़ा अपराध हुआ मेरे देखते इसने आपके साथ ऐसा किया इस अपराध को क्षमा कीजिये फ़क़ीर बोला कि इसने तो बहुत कृपा की कि शिर मेरा इसी लायक़ है कि झुकता न था उस पाप को कुछ दूर किया सुनके साहु बोला आप क्यों न कहैं ॥

पद। साधुन की असि रहनि सदा है। तन मन से सियराम परायन उनहीं की गुण गहनि सदा है १ गुण पहिंचानि नीम के रस से कटुक वचनकी सहनि सदा है। गुणको गुण लखनो का अचरज दोषे में गुण गहनि सदा है २ बाहर भीतर बसी दीनता सतसंगति की चहनि सदा

है। नामै रटति निरंतर रसना प्रेम नेम निरबहनि सदा है ३ जेठ तपन से महातपन से विषय रसनि की दहनि सदा है। महादेव योगी से बनि कै रामचरित की महनि सदा है ४ ॥

वार्ता । कृपानिधान ! हमको बहुत प्रकार से रघुनाथ का ध्यान सुजानों ने बतलाया पर करता हूँ तो होता नहीं क्या कारण है कृपाकर कहिये बोले ॥

पद । कैसे रामरूप लखि जाय । जिन आंखिन सों याको लखिये सो तो गई है मुँदाय १ फूली तिमिर बिन्दु औ माड़ा परतन में रहे छाय। विषय मदार दूध नित लावत नीली भरत पिसाय २ वेद पुराण उपाय कहत सो आन भांति समुझाय। आंधर गुरू बहिर मिलि चेला फैल रह्यो यह न्याय ३ रघुकुल भानु चरण करुणा से संत जौहरी पाय। रामरंग रस लागत लागत देवदृष्टि लहराय ४॥

वार्ता । अब दुनियांके छोड़ने की चाल जानना चाहिये बड़ा भेद छोड़ने का यह है कि उसके दुःख दोषों को याद

करैं और दुनियांका ध्यान मनसे निकाले एक महात्मा ने कहा कि मैंने संसार को इसलिये छोड़ा लाभ कम श्रम बहुत है और थोड़े दिन में मिटनेवाला है दूसरे महात्मा ने इस बात में भी एक बात निकाल कर कहा इस कहन से भी दुनियां की प्रीति पाई जाती है इसलिये दुनियां में जो लाभ बहुत हो और श्रम न हो और दुनियां कभी न मिटै तो ऐसी दुनियां के मिलने की चाह पाई जाती है पूरी बात तो यह है कि दुनियां ईश्वर की वैरी है भजनानन्द ईश्वर के प्यारे हैं तो चाहिये मित्र के शत्रु को शत्रु जानना दुनियां एक मुरदार है प्रकट में सुगन्ध सुन्दराई से बनी हुई इसलिये बुद्धिमान् उसको छोड़ देते हैं और मूर्ख उसके ऊपर मोह जाते एक पण्डित ने एक पण्डित से पूछा अपनी तिरिया अपना द्रव्य आदि के संग्रह में क्या खोटाई है उत्तर दिया अधिक भोजन वस्त्र सब दुःख देनेवाले हैं जो कोई कहै मन इन्द्री के रहते रहते कैसे हो सकता है उत्तर यह है कि प्रभुकी कृपा से दुनियां के दोष दुःख जानने से वह वैसाही होगा जैसा कहा गया पर जो दोषों से और दुःखों से खबर नहीं रखते सो उस पर मोहित होते हैं और इस बात से बहुत आश्चर्य करते हैं इससे एक कथा लिखता हूँ कि जिससे यह बात समझी जावै किसी ने बादाम इलाइची डालकर हलुवा

बनाया और उसमें थोड़ा विष भी मिलाया एकने उसे देखा दूसरे ने नहीं जो हलुवाई वही हलुवा दोनों के सामने रखदे तो जो विष डालना जानता है उसके भोजन पर कभी चाह न करेगा क्योंकि उसके दोष को जानता है पर जो नहीं जानता वह प्रसन्न होकर खा लेगा और नहीं खानेवाले से कहैगा कि तू बावला है जो ऐसा भला हलुवा नहीं खाता यह उपमा उन लोगों की है जो दुनियां के दोष जानकर उसको मैली जानते हैं जो नहीं जानते जगत् के साथ प्रीति करते हैं अब चाहिये जगत् की चाह मिटाने के पीछे व्यवहार से अलग हो दोभेद से एक यह लोग भजन न करने देंगे पाप और दोष में डालेंगे एक महात्मा ने जगत् के लोगों से यह पांचो मांगा पर एक भी न पाये एकतो भजन करने को कहा उन्होंने न किया फिर कहा कि मेरे भजन करने में सहाय करो वह भी न किया फिर कहा हम भजन करते हैं तुम उस से वैर न मानना उस पर भी राजी न हुये कहा भजन से रोकना मत उन्होंने रोका कहा जिस काम से प्रभु अप्रसन्न होते हों उसके करने को मुझसे न कहना और मैं न करूं तो मुझसे वैर न करना यह भी न माना शत्रुता की दुनियां में पढ़कर सिखावनेवाले बहुत चलनेवाले थोड़े हैं और केवल ठगने के लिये सिखावना पढ़ावना है ॥

पद। सुख नाहिं मिलत कहीं का राम। धनही के ठग जित तित भागे रहत न मनकों थाम १ कान फूँकि ऊँचे चढ़ि बैठे आजेनि मंदिर धाम। निशि-वासर तोड़ यतन बिचारत आवे बहुर दाम २ सीखि साखि कुछ धारि गपोड़े जग में भे सरनाम। कछु करनी करतूति न देखी केवल जीभ गुलाम ३ इनसे का परमारथ बनि है जिन में झमकत काम। दुर्लभ देवहु के सुर आस में सोचौ आठौ याम ४ ॥

वार्ता। एक महात्मा ने भक्त से पूछा कि मुझको भली बात बतलाइये कहा लोगों से बहुत पहिचान न कर फिर कहा कि बहुत लोगों से मिलने में बहुत भला है भली २ बातें देखने सुनने में आती हैं महात्मा बोले भला कोई मिलनेवाले सिवाय बुराई और से भी हुई है उसने कहा नहीं बोले इस समय में जीभ को रोकना चाहिए मुख्य भलाई इस पद में है ॥

पद। काको कहत तू मेरो यामें तेरो कौन है ॥

मतलबही से दुनियां रंगी बूढ़ तरुण औ छौन है । बिन मतलब कोइ बात न पूछत ऐसी जग की ठौन है १ झूठ कपट छल करि करि साजेनि धन दारा सुत भौन है । ये क्या तेरे संग चलेंगे तेरो तो निज गौन है २ नहिं कोइ बेटा नहिं कोइ बेटी सबमें खेलत पौन है । रामलगन बिनु सब रस फीके जस व्यंजन विनु लौन है ३ एकबार तजि फिर लेनो जस कूकुर चाटत बौन है । देव दुहाई या झंझट में सबसे आछो मौन है ४ ॥

वार्ता । छिपकर किसी ठौर में बैठ रहिये और इस पद के सरिस सिद्धान्त करिये ॥

पद । नहिं मरम किसी से कहना आय पड़ै सो सहना ॥ बकवादन में सार नहीं है ज्यों पानी का महना । कथनी छोड़ि साध संतन की करनी रहनी गहना १ क्षमा साधि के कोप अगिनि से सुखी जीव नहिं दहना । जानि बूझि के मोह

पद । नादमें अनादता न आजु लौं भई है। निज निज रुचि बनत जात युक्ति नित्य नई है १ कौन लगाम साइति से बाद बेखि बई है । जाहि परसि अंग अंग लाज सी छई है २ अमल करत भल जुड़ात बकबक्की तई है । आपुइ सब जानि लेत इलनी पंडितई है ३ अस भांति गुरुदेव कही जामें सुचितई है । राम रंग बरसि रह्यो दशादिशि सुखमई है ४ ॥

वार्ता । एक महात्मा ने दूसरे महात्मा से कहा आवो एक जगह रहकर सत्संग करें कहा दोके मिलने से एकान्त का बैठना भला है क्योंकि दोके मिलने में नान बड़ाई का ध्यान और बातबात में अपमान निकलता है औ दूसरा यह है कि छुट्टी भी नहीं ॥

पद । कासों का कहिये घरही में रँग लागा । कठपुतरी सी इन्द्री नाचें कसे करम के धागा । कपिसों चंचल मन नाचत है फँसा विषय अनु-रागा १ नाचत जीव अविद्या के वश पहिरे दुर्मति

चागा । तोर मोर की तारी बाजैं लोभ न तजत अभागा २ मारिउ खाय निशंक चरत है जीव सांड़ जस दागा । जनम जनम से जमत जमत मूल बना हंससे कागा ३ नीकी समुझ रही सो आई देव दया से जागा । देखा श्याम सकल घटपूरण कतहुँ नहीं कछु खागा ४ ॥

वार्ता । एक राजा महात्मा से मिलने को आया महात्मा ने किवाड़ बन्द कर लिया दूसरे महात्मा ने पूछा क्यों न मिले कहा मेरे जान संदेह मोह से मिलना अच्छा इस राजा के मिलने से मिलने में बहुत काल व्यर्थ जाता और देहधारी मोह को देखें तो उससे मुँह फेर बैठें, एक फ़क़ीर की कथा है एक ज्ञानी फ़क़ीर से मिला देर तक इकट्ठे बैठे, जब विदा मांग उठे तो फ़क़ीर ने कहा मुझे याद नहीं किसी ठांव यहांसे अधिक ठहरा होऊँ, ज्ञानी ने कहा कि मैं भी इतना कहीं नहीं ठहरा तुम भली बातें शास्त्र पुराणों की करते थे मैं भी वैसाही बोलता था हमारी बातें तुमको तुम्हारी बातें हमको भाईं इसलिये पहरों का काल पल सम होगया, जान न पड़ा इतना सुनतेही फ़क़ीर आह कर गिरा कहा इतनी देर वे भजन कथनी में खोया ॥

पद । कथनी से का होइहै कछु करनी चाही ।
कथनी केवल वाद बढ़ै है करनी वादहि खोइ है १
करनीवारो अंत लहै सुख कथनीवारो रोइ है ।
करनीवारो जियत मुक्त है टांग पसारे सोइ है २
कथनीवारो मारि खाइकै वारवार शिर टोइ है ।
जैसी करनी कर राखी है तैसो बोझा होइ है ३
साधनवारो साधन करिकै अंतर मल को धोइहै ।
कथनी तै वारे कथरहिहै देवरूप वह जोइहै ४ ॥

वार्ता । जब दो महात्माओं के मिलने में यह बात है तो दुनियां वालों की क्या चर्चा एक महात्मा से किसी ने पूछा आप अकेले क्यों बैठे रहते हैं बोले जब बड़े से मिलना हूं तो मेरा जी जलता है उनके अपमानों से छोटे से मिलने में अहंकार बढ़ता है और उसका जी जलता है बराबर से मिलने में बकवाद और ईर्षा होती है इसलिये हमने मिलनाही छोड़ दिया अब यह जानना चाहिये लोगों से अलग होने और एकान्त में बैठने की क्या राह है और कितना उचित है इसमें दो भांति के आदमी हैं एक वह जगत् के लोगों को उनसे परलोक की बात में कुछ काम न हो कोई विद्या की बातें सुनै या कोई विधि-

निषेध धर्मशास्त्र उनसे पूछे ऐसे लोगों को चाहिये प्रयोजन से अधिक किसी से न मिलें ऐसे छिपे रहैं कि कोई न जानै और न वह किसी को और किसी कामके कारण से लोक परलोक के कार्यों में सबका मिलना छोड़दें तो ठीक नहीं पर इस भांति किसी दूर जगह पर जारहैं कि वहां कोई न हो पहाड़ और टापू आदि में इसलिये भजनानन्द बस्ती छोड़कर रहते हैं और जो आदमी परलोक की बात सिखाता हो सो एकान्त में न रहै जहां परमेश्वर ने सब जीवों पर कृपाकर वेदादि सब प्रकट किया तो सेवकों को भी उपदेश करना उचित है एक भजनानन्द से इसी भांति एक ने कहा भजनानन्द बोले कि हमैं लोगों से बकने का बल नहीं है तुझको परमेश्वर ने बल दिया है तो बक जो लोगों के बीच में रहै उसको पहिले संतोष चाहिये दूसरे भीतर से सबसे अलग रहै प्रकट में उनसे मिला हो वह बात करें तो यह भी बोलै जो मिलने आवैं उठ आदरकर मिलै॥

पद। आगता को स्वागत कीजै प्रेमते आगे ह्वै लीजै। पाद्य अरघ कर देइ सुखासन मधुर वचन कहिये दुखनाशन। राउर आवन भाग्य प्रकाशन कछु तो आयसु दीजै १ तृण जल बोसरी

वचन सुधासम इतने में तो करिये नहिं कम । शरणागत को भजिये दस दस दिन दिन पातक छीजै २ अति प्रसन्न करि करी विदाई फिरि ये चरणन में शिरनाई । बलविद्या औ आयु बड़ाई पाइ सुखहि से जीजै ३ एकै देव सकल घट माहीं पूजिजात सोइ संशय नाहीं । सपनेहु लखि याकी परछाहीं को न रामरस भीजै ४ ॥

वार्त्ता । और कोई भलाई करता हो तो वाह वाह करै और बुराई में हो तो रोकै किसी से कुछ बदला न ले जो होसकै सो देदे सो याद न रक्खै जो कोई दुःख दे तो सहले किसी भांति बदला न करै पीड़ा को प्रकट भी न करै माननेवाले से मनोरथ को बहुत छिपावै औ मरने का ध्यान धरै रात को सो के अपने जीने को व्यर्थ न करै और दिन को सोके लोगों की भलाई से हाथ न धोवै औ ऐसे लोगों से मेल रक्खै जिनसे परलोक की हानि न हो जो लोगों में रहै तो इस भांति रहै पर ऐसा रहना कठिन है इसलिये एकान्तही का रहना ठीक है वह बोला कि बड़ों ने कहा है अकेले के साथ में प्रायः अविद्या रहती है और दो चार के साथ से डर रहती है और देखा

भी है कि अकेले रहनेवाले बहुत फ़क़ीर बिगड़ गये हैं औ काम के समुद्र में डूब मरे हैं इसलिये दश पांच के बीचही का रहना ठीक है ॥

पद। जो तू भजन किया चाहै तो किसने तुझको रोका है। तेरी कचाई रोकि रही है तू उल्लू का छोका है १ जग इन्द्रिन से भजन सुरति से जुदा जुदा यह नोका है। अगर कोई दूनों साधै तौ इसमें क्या वे मौक़ा है २ कधी न फ़ुरसत होगी बन्दे गजब हवा का झोंका है। जब लौं तू डरता है इनको तबलौं टोकी टोका है ३ उसी देवकी खिजमत करते सभी फेर समझौंका है। दिल का फेर मिटा उसही ने जिसने झारा ठोका है ४ ॥

वार्ता। उसने उत्तर दिया कि भाई अकेले के साथ अविद्या का रहना तुमने कहा, और जो लोगों की संगति छोड़ि अपने श्रीराम के संग रहते हैं उनको अकेला किस रीति से कहते हो वह उत्तर प्रश्न इन दोनों का सुन तीसरा बोला भाई कुसंग छोड़ने में ता सब महात्माओंका सिद्धान्त है और सुसंग

को रामकृपा कहै है जो कृपा छोड़ै तो तुरंती छोड़ देवै अब अविद्या के गुलावा को जानना चाहिये अविद्या आदमी से सात भांति छल करती है पहिले भजन से रोकती है उस काल में ईश्वर की कृपा से अविद्या को इस विचार से हटावै कि हमारा रामभजनै करना काम है ॥

पद। आया जग में क्या करने को। एती बात शोच तू दिल मा कुछ तो मान मरने को १ वृथा फंद फौरेव साजि को की परधन हरने को। की तू आया राज करन को की करजा भरने को २ किसमत मों जो लिखा है तेरे सो तो नहिं टरने को। की तू चहत सरग की तारा कूदि फांद धरने को ३ रामभजन ही को तू आया नहीं घास चरने को। देव दुहाई अब मालिक सों कछु चहिये डरने को ४ ॥

वार्ता। दूसरा जाल फैलाती है भजन में ढिलाई करने को कहती है फिर करलेना इस समय इन कामों को करलो उस काल में प्रभुकी कृपा से यह विचारो कि मेरी मृत्यु मेरे वश नहीं है नहीं जानते कि कितनी देर तक जीऊं ॥

पद। के जानें का होई राम कवने छन में ॥ किया चहै सो अवहीं करिले धरा चहै सो अवहीं धरिले। समुझि बूझि अपना दिल भरिले यम से बचा न कोई क्या घर क्या वन में १ राम तिलक का साज सजाया दशरथ ने सब के मन भाया। होत प्रात वनगमन सुनाया अचरज होत बड़ोई सुनि सबके मन में २ कब मनभावत धन पावैगो थोरो धन तो नहिं भावैगो। धरम पंथ में कब धावैगो उमिरि गई सब खोई अब बल नहिं तन में ३ देवन को दुर्लभ तन पाया पाय रतन अब चहत गवांया। मानत नहीं बहुत समझाया सुधा चहत विष बोई सुख राम भजन में ४ ॥

वानी। तीसरा छल यह है कि भजन में जल्दी करने को कहती है जिसमें जैसा चाहिये वैसा न हो समझाती है जल्दी २ छुट्टी करो यह यह काम करने को हैं राम की कृपासे यह समुझ मनको रोकै थोड़ा भजन अर्थ विचार स्पष्ट उच्चार के साथ स्वाद लेलेकर भला है और बहुत से काम बेगार होने से हैं॥

पद। चीखि चीखि चसकनसे रामसुधा पीजिये। रामचरित सागर में रोम रोम भीजिये १ रागद्वेष जग बड़ाइ काहे को कीजिये। पर दुख कन देखत ही आपसों पसीजिये २ तोरि तारि खैंचि खांचि श्रुतिको नहिं गीजिये। जा में रस बनो रहै वही अर्थ कीजिये ३ बहुत काल सन्तन के दोऊ चरण मींजिये। देवदृष्टि पाइ विमल युगयुग लौं जीजिये ४॥

वार्ता। चौथी यह है कि दिखा के भजन न करना चाहिये राम कृपा करैं तो यह विचारें लोगों की मान बड़ाई मेरे किस काम आवैगी प्रभु तौ मेरा देखता है॥

पद। निगमनत्व पायकै शरण भइ रामके। केऊ बांधौ घोड़ा हाथी केऊ सांचो दामके। केऊ चाहौ मान बड़ाई मोरे कौने कामके १ केऊ ब्रह्मज्ञान छांटौ केऊ तापौ घामके। केऊ योग समाधि लगावो मैं तौ रटिहौं नामके २ केऊ ऋग यजु पढ़ौ

नेम से केऊ गावौ साम के । मैं तौ रामचन्द्रगुण गैहौं नीके आठो याम के ३ केऊ जियत देव सुख चाहौ केऊ परम धाम के । मैं तौ संत चरणरज चाहौं तजिकै चक्कन चाम के ४ ॥

वार्ता । पांचवां सामने आय अहंकार की बातैं सिखा कहती है आज तुझसा प्रभु का प्यारा कौन है दिन बैठ रात जाग संग साथ त्याग भजन करता है प्रभुकी कृपा से उस काल यह विचार में जो करता हूं सो प्रभुकी कृपा से वे प्रभुकी आज्ञा भजन की शक्ति नहीं है यह भी उसीका खेल है जो कृपा न हो तो मैं क्या करसक्ता ॥

पद । मिलल बड़ एक भरोसवा । हम सब कै तौ जड़ में गनती चेतन तुहईं एक । तब कैसे हमरनके प्रभुजी लागि सकै गुण दोषवा १ कठ-पुतरी अस हम सब नाची करम तार में फँसिके । हमसब के तौ प्रकट नचावहु आपु बैठि भल गोंसवा २ कछु करनी करतूति न मोरी तोहरिहि बीसे बिसुवा । बीच बीच में बात बिगारहिं बंधक पांचो

कोसवा ३ रामरंग में घटि बढ़ि नाहीं तकही में कछु धोखे। मैं किंकर प्रभु देव सलातन अब नाहक अफसोसवा ४ ॥

वार्त्ता। छठीं इस भांति है उसकी किसी को खबर नहीं होती वह कहती हैं कि भजन छिपा के कर परमेश्वर तेरे श्रमको प्रकट कर देगा उस समय प्रभुकी कृपा से इस रीति हटावै कि भजन प्रकट होने से क्या काम है मैं सेवक हौं बंदगी करना ही मेरा काम है चाहै प्रकट करै या न करै लोगों के वश में क्या है जो प्रकट होने से मुझको मिलेगा ॥

पद। अबतो दास भये हैं खासे सिय वर रूप पियासे। आइ दीनता बात बनी सब सियजू की करुणासे। अहंकार का कूड़ा पटका वेदांतिनके वासे १ ईर्षा लाज धरी गोरुनमें क्रोध सांपके डासे। सब अवगुण निंदकके शिर धरि नित मन बढ़त हुलासे २ द्वैत सदा अद्वैत कबहुँ नहिं चौड़े कहहु खुलासे। दासभाव का डंका बाजै वेदनकी महिमा से ३ मंगलमय दिशि विदिशि हमारे सकल अमं-

गल नाशे । रामदेवके नाम दीपसे अंदर भवन प्रकाशे ४ ॥

वार्ता । सातवें विवाद से कहती है तुझे भजन से क्या काम जो तुझे कृपा से प्रभु ने भला बनाया है तो भजन से कुछ प्रयोजन नहीं जो कोप से बुरा बनाया तो भजन करनेसे क्या होगा जो प्रभु कृपा करें तो यह विचारें कि मैं सेवक हों सेवा उनकी मेरे शिर पर है स्वर्ग हेतु सिरजा हूं व नरक हेतु इस-लिये हनुमान्‌जी आदि ने निरंतर भजन ही किया और भजन करना वर मांगा है ॥

पद । हनुमत कहत वचन हर्षायकै ॥ जरत रहेउँ मैं विषय रस खायकै । बाचेउँ तोर सुधारस पायकै १ न तौ मरतेउँ तनमें लपटायकै । जैसे माछी मकरी के जाल अरुझायकै २ केउ चाहौ कछु फल बहुत मनायकै । मैं तो चाहौं दासपनो विनय सुनायकै ३ देवदेव देउ वर इहइ अघायकै । भजऊँ निरंतर पद मन लायकै ४ ॥

वार्ता । भजन के रोकनेवाली अविद्या है भजन करनेवालों

को उसके साथ लड़ना और उसको भगाना उचित है दो भांति से पहिले यह अविद्या ऐसी दुष्ट है जिसके साथ में सुलह हो नहीं सकती आदमी को जब तक मार नहीं लेती नहीं छोड़ती ऐसे वैरी से निडर रहना बड़ी भूल है दूसरे अविद्या आदमी के बिगाड़ने के लिये हुई है रात दिन उसी ध्यान में रहती है उसे लोग भूले रहते हैं उसको बहुत वैर भजन करने वालों से है कहती है वह तो सदा भजन में लगा रहता है सारे जगत् को अपने कहने करने से भजन में प्रीति दिलाता है यह मेरे काम में उलटा है इसीलिये वह भी उसके मारने पर कमर बांधे रहती है अविद्या को सब लोगों के साथ साधारण शत्रुता है और भजनानन्द के साथ में विशेष इसी हेतु से बड़ी जल्दी से भजनानंदों का मारना है, उसके बहुत सहाय हैं काम आदि पर सब से अधिक मन झट द्वार खोल अविद्या को बुला लेता है भजन करने वालों को खबर भी नहीं होती अविद्या का यही एक काम है और आदमी को बहुत है वह सदा देखती रहती है वह उसको नहीं वह नहीं भूलती यह भूल जाता है जब यह ढील होवे उससे लड़ाई या भागने की दो राहें हैं एक राम से बचाव मांगै कि हे कृपानिधान इससे मुझे बचाइये ॥

पद । कौनिकी ताको रिसौंहीं भौंह राम रहहु

तुम सौंह ॥ रहे परम पद साधत बीचै परी चाह चकचौंह। रतन खोइ कै कौड़ी पाई चाल चले इतरौंह १ इंद्री उदर बड़ाई कारण होत जात बदरौंह। वह रस यह रस एक न होई जैसे श्राम भदौंह २ राम शरण न भयो सोइ ताको यम के दृग करछौंह। हौं तो राम शरण सब विधि से इहां नहीं तातौंह ३ जाकी भौंह नचावति कालहु बलवन्तहु ते बलौंह। देवन हू के ताप नशावति जसि छायावति सौंह ४ ॥

पद। शरण पद लागत रामहि में। श्रवरन में तो खींचिखांचिके कीधौं धामहि में १ सरवारो सो शरण कहावत यह रस नामहि में। रामदेव हौं धनु सरवारो मानहुँ सामहि में २ ॥

वार्ता। अविद्या रामजीकी कुतिया है और के भगाये न भागेगी रामजीके भगाये से वेपरिश्रम भगिजायगी ॥

पद। करतहौं इन पायन की सौंह। इन्द्र चन्द्र

ब्रह्मादिकहूं की अब न चितैहौं औंह १ जन्म मरण चिंतासे छिनछिन जिनके मन घुमिलौंह । मृत्युंजय हू को सुनियत है देह धरे को टौंह २ आन भूप केहिलेखे याहीं जे आये पहुनौंह । राउर नावहिं से इनहूं को मानौ अस श्रुति डौंह ३ मनमलीनता कालजाल से जस अकाश बदरौंह । कबहुँ तो देव शरद ऋतु आई चमकिहि चांदनि सौंह ४ ॥

वार्त्ता । दूसरा उपाय अविद्या के दूर करने में भजन है ॥

पद । सबके मतमें भजनहिं आवत । ब्रह्महिं भजत भजत कोउ कर्महिं कोऊ तो शिवशक्तिहि गावत १ अद्वैतों में द्वैत सदा है नाहिंत कैसो फिर उपजावत । याहीते जग सत्य कहत श्रुति झूठ न जन्म सांचते पावत २ जो परमाणु महत्त्वो ऐसे सब में साथ थहावत । नउका अर्थो नहीं विचारत अहङ्कार से वाद बढ़ावत ३ एकौ में पुनि अङ्ग बहुत ते सेवक स्वामी भाव बनावत । आपुइ देव दास

पुनि आपुइ दूनों नित्य यहै मत भावत ४ ॥

पद। वही चतुर वहि पक्का है। जिसने राम-चन्द्र पदहीसे सून लगाया तक्का है १ दोदिन ज्ञान पन्थ पर चढ़िके यौंहीं मूरख बका है। राम भजन बिन तो अजगैबी लागत हुकुमी धक्का है २ जगत नहीं यह अमृत ही का दही जमाया चक्का है। संतन माखन दिया जगत तो छाछ बाद से जक्का है ३ अंदर का जब राम लखा तब क्या काशी क्या मक्का है। दीदारू बाहर का सौदा मसल कबूतर लक्का है ४ रामभजन की बेलि लगाई सत जन माली सक्का है। राम देवाना रामरंग में हरदम छकि छकि छक्का है ५ ॥

वार्ता। और मन के कहने से उलटा किया करे ॥

पद। जरौ धृग ऐसी मनुसाई ॥ आतम राम बिहारी सौं तू खता की गति जहँ नहिं पाई १ इन्द्रिन को रस को नहिं समुभत देवमनुज पशु

समुदाई। उनते जो न सधै सो साधै तबहीं नर की प्रभुताई २॥

वार्ता। एक महात्मा तो यह कहते हैं इन दोनों बातों को इकट्ठा करले ईश्वर के शरण जाय भजनमें भी लगारहै शरणागत पीछे भी अविद्या को अपना पीछा करते देखै तो जानले प्रभु के ओर से परीक्षा है अविद्या के हटाने को तीन हथियार हैं पहिला यह उसके छलों को जाने जो लोग उसके छलों को जानैंगे उनपर जोर न कर सकैगी जैसे चोर जान लेता है कि जागता है तो भाग जाता है दूसरा यह जो बात मन में बुराई की आवै वह अविद्या के बहकाने से जानै उस पर दीठि न दे मन उससे रोके क्योंकि अविद्या एक कुतिया भूकने वाली है जो कोई उसे देखेगा तो पीछे पड़ैगी जो ध्यान न करैगा तो चुप हो रहैगी तीसरा यह कि जीभ से नाम रटै मन से उसका अर्थ विचारै॥

पद। लगै जो राम रटन की चसक। तौ छूटै सब कसक॥ कहा भयो गज झूम द्वार पर अन्त होयगी खसक। जीवत मृत सम राम रटन बिनु ज्यों लोहार की मसक १ वृथा बदन छिरथा यह

रसना वृथा स्वाद को ग्रसक। जौ न महारस को पहिचाना व्यर्द जयो कुच नसक २ दुखदाई नाते इत उत से आइ जुरे जस डसक। गई न जिय से सदा बनी है महा मरन की धसक ३ साधन अरन यहि को पावत न्याव पटम्बर टसक। ब्रह्मादिक देवहु जानत हैं रामनाम की ठसक ४ ॥

पद। यही सार निचुरि रह्यो राम नाम रटन। याहीमें ज्ञान योग तीरथ को अटन १ रामनाम हीर और साधन सब छटन। रूप में मिलावनकी नामहीमें घटन २ नामही को भूरि कहत वेद बड़े ठटन। यामें कुछ नाहिं देखात सटन बटन जटन ३ देव मंत्र नामहिं को वक्रभाव नटन। सीधो पथ पाइ चहत भली मजा पटन ४ ॥

पद। रंगरँगीलो नित चटकीलो नाम ब्रह्म मोहिं भाय रह्यो। विधि निषेध जहँ एको नाहीं वेद महातम गाय रह्यो १ शब्द अरथ से सरगुन

निरगुन दूनों भाव बताय रह्यो । आप तीसरो जापक जनको वाहीमें पहुँचाय रह्यो २ नामरूप व्यापिक याहि मतसे बहुतन को बहकाय रह्यो । अर्थ अनाम नाम याहि पदको तहां धातु दरशाय रह्यो ३ प्रथम नाम पाछे है नामी महाराजता पायरह्यो । सोइ रहस्य गुरुदेव सिखायो रामरंग में छाय रह्यो ४ ॥

पद । जगत में उनहीं को है रंग जिनके नेम अभंग ॥ पाप हरत जे दरश परश से जैसे गंग तरंग । जिनके हिय सिय राम लगन की छिन छिन उठत उमंग १ पियत निरन्तर नाम सुधा रस हुलसत आठो अंग । नामहिं में दृढ़ होय रहे हैं छोड़ि छाड़ि सब जंग २ ककरहटी धरती लखि दुख नाहिं सुख नहिं पाय पलंग । जियत विदेह दशा जिन्ह पाई जे नित रहत निहंग ३ इष्टदेव चिन्तन में जिनको सदा रहत मन दंग । भक्त

प्रेम वश निशि दिन सिय वर विहरत तिन के संग ४ ॥

वार्ता। प्रभुका ध्यान धरै या भगवद्यश कथनकरै तो अविद्या के गात में आग लगजाती है वहां से भाग जाती है अविद्या का भेद तब जानै जब छल उसका जान ले एक यह है कि नेकी के ओर से बदी में लगाती है और कभी नेकी के ओर भी लगाती है पर उस नेकी का फल बद है नेकी के आड़ से कोई ऐसी बदी जिसका पाप उस नेकी के पुण्य से अधिक हो जैसे अपने बड़ाई के लिये जप दान तीर्थ आदि उन दानादि में लोगों का अपमान आदि पाप उनकेपुण्य से अधिक होता है इसलिये शास्त्र के अनुकूल और दंभ रहित काम को करे शास्त्र प्रतिकूल दंभसहित कामों को छोड़े यश बहुत फैलजाय फिर कम होजावै और अहंकार आजावै तो जानना चाहिये कि अविद्या की यह युक्ति बहकाने की है और यश दिन दिन बढ़ै और अहंकार न आवै तो प्रभुकी कृपा जानना सबसे मन बड़ा शत्रु है इसलिये कि मिला भी रहता है और मारा चाहता है फिर भीतर घरका रहनेवाला ठहरा इसलिये मनके औषध में आदमी को बड़ी महीन बात और कठिन राह का जानना पड़ता है ॥

पद। मन न थिराइ भँवर अस छटपट ॥ योगहु

से मन होला खटपट। अति चंचल से इहो बड़ अटपट १ करतै करत जगत कै खटपट। कोउ न लखै उड़ि जाय पक्षी चटपट २ जब यम कै चट उन लागी पटपट। अक बक न चली बिसरि जाय सटपट ३ कथल चहसि तौ कइले झटपट। चरण कमल से होइ रहु गटपट ४॥

पद। शोचहु काहे भयल मन चलबल। जो स्वभाव से मानहु हलफल १ तौ काहे के कहेसि श्रुति कलबल। पवन चढ़ल मन तेसे खलबल २ ज्ञानकै छूति इहौ तोर गलबल जब उर उठै विषय कै कलबल। तब बौरहि करै ऊंट जैसे बलबल ३ जनम जनम कै बाढ़ल मल बल। रामभजे बनै छोड़ि कै छलबल ४॥

वार्ता। और मनरूप घोड़े को रोकनाही लगाम देना है कोई कहैगा कि मन बदलगाम घोड़ा है कहना नहीं मानता वश क्योंकर होगा उत्तर, यह बात ठीक है, इसलिये पहिले उसको नरम कर लेना चाहिये जिससे लगाम लेने लगै इस काम के

जाननेवालों ने कहा है कि मन नरम करना तीन रीति से हो सक्ता है पहिले सब गांसों से रोक रक्खै यानी जानवर को जब घास दाना न मिले तो कमजोर होता है दूसरे उस पर भजन का बहुत बोझ दे इसलिये कि जब घोड़ेपर बहुत बोझ लादते हैं तो नरम होजाता है विशेषकर उस काल में कि जब घास कम मिले तीसरे परमेश्वर से सहाय चाहै और उनके सामने रोवे क्योंकि वे सहाय उसके उससे छुटकारा नहीं जब इन तीनों को करे तो मन थोड़ा आपमें आप वश होवेगा उस काल जल्दी भगवत् प्रीति जेरकद्दा नामरटन लगाम प्रभु का सर्वीना ताग आज्ञा माफिक चलना नाहरी देकर उसकी बदी से बेखटके होना चाहिये ॥

पद। हम रँगा केसरिया बागा जुरा राम से धागा। मन घोड़ा पर लाग लगमियाँ ज्ञान खरग विनु तागा। राम नाम का डंका बाजै खेलों रणमें फागा १ मदत हमारी साधु संत हैं भरे राम अनुरागा। छत्र हमारे सत गुरु जिनको देखत पाजी भागा २ बड़ा प्रेम जब संत पदन में अनायास विनु दागा। तब हम हूं मन में निज जाना भाग

हमारा जागा २ मान बड़ाई सुख संपति तजि देवन से वर मांगा। दिन दिन चोखी राम लगन में रहउ मोर मन आगा ४ ॥

वार्ता। इन्द्रियों का रोकना अवश्य है कुछ रोकने की रीति लिखता हूँ पहले आँखों की चोटसे परलोक की ओर से बहुत लोग रोगी होते हैं इसलिये सुन्दर तिरिया आदि का देखना भला नहीं विशेष कर अकेले में शास्त्र में लिखा है रूपवती युवा मा बहिन बेटी हो पर अकेले में उनके पास न बैठे किसलिये कि इन्द्रियां बलवान् हैं ज्ञानियों के मन को भी खींचती हैं एक महात्मा ने लिखा है जिस समय बुरीदीठि में देखा संगका पाप हुआ त्यागी को तो जवान रूपवती लिखी भी न देखना चाहिये नारद ने लिखा है रूप पर आंख पड़ते जब बुरा ध्यान मन में आवै तब झट प्रभु के रूप का सुमिरण करें लौकिक रूपों को अनित्य मन और अंग अंग में घिनावन ध्यान ठान के भाव (मेह परे जेहिते मलको यह देहते कीन्हे सनेह कहा है) मनको हटावै शास्त्र गुरु रूप आदि के देखने में और श्री जानकी रामके ध्यान में लगावै ॥

पद। बसो यहि सिय रघुवर को ध्यान। श्यामल-

गौर किशोर बयस दोउ जे जानहु की जान १
लटकत लट लहरत श्रुति कुण्डल गहनन की झन-
कान। आपुस में हँसिहँसिकै दोऊ खात खिआवत
पान २ जहँ बसंत नित महमह महकत लहरत
लता बितान। बिहरत दोउ तेहि सुमन बागमें
अलि कोकिल कर गान ३ ओहि रहस्य सुख रसको
कैसे जानिसकै अज्ञान। देवहु की जहँ मति पहुँ-
चत नहिं थकिगये वेद पुरान ४॥

पद। मनहींमन मूरति भायरही॥ राम दुलह
सिय दुलहिनिकी। लालपीत अंबर मिस जनु वह
गोधूली तहँ छायरही १ रतन मुकुट द्युति शिर पर
जगमग तारा पथ द्युति पाय रही। उत मोतिन
मिलि चूड़ामणि छवि तारापतिहि बिराय रही २
इत कुंडल मिस रवि लहरत जनु उत बिरिया झल-
काय रही। इत कर लसत रतन कंकण छवि उत
पहुँची पहुँचाइ रही ३ पांयनके मखमल मख-

भलिया जोरी यह समुझाय रही । या रस कहत महादेवहु की मति गति प्रेम भुलाय रही ४ ॥

पद । साधौ जिन सुमिरो कछु और श्याम को ध्यान धरो । मोरपूँछको पंख अपावन सो जाको शिरमौर । का घुंघुची का लकुट बापुरो का गोवन सँग दौर याही पहिचान करो १ कस्तूरीको बिंदु भालमें तनमें केसर खौर । युगल अलग कबहूं नहिं यामें मत कर तू झकझोर प्रेमसे ध्यान करो २ झूठे विषय अलख औ मैले जस कूकुरके कौर । तिनमें तोष भयो नहिं होइहै ताही की नित गौर ऐसो तेरो ठान जरो ३ मानी मानसिंधु में बूड़े लिख पढ़ि करते चौर । देवकिसुत की छांह छोड़ जिनि चाहो भूसुर और पाय गुरु ज्ञान तरो ४ ॥

वार्ता । कानके सम्हालने की रीति यह है निकम्मी बातैं स्त्री आदि की और वे प्रयोजन की वार्तों के सुनने से रोके सुननेवाले को भी कहनेवाले के बराबर पाप होता है और

दूसरा यह कि निंदादि के सुनने से मन में वैर और शोच पैदा होता है यहां तक कि मन में भजन का कुछ ध्यान भी नहीं आता और जो बात मनमें कान के राह से जाती है, भोजन सरिस है जैसे कोई भोजन भला है कोई नहीं इस भांति बातों को भी जानना चाहिये पर भोजन पेट में थोड़ी देर रहता है और बात बहुत दिन वरु सारी अवस्था इसलिये बुरी बातों के सुनने से रोके और कथा पुराणादि और महात्मों के सुनने में कान लगावें की श्रवणै से सब भाव होते हैं ॥

पद । श्रवणै सब भावन की जरि है । विना सुने कैसे कछु जनिहै बिनु जाने नर का करिहै १ यद्यपि देखेहु से नर जानत तदपि तहां संशय परिहै । कहे सुने बिनु वा संशयको कहहु न कैसे को हरिहै २ श्रवणहिं से रुचि अंकुर उपजत डार आदि क्रम से भरिहै । सतसंगति जीवन सिंचन से सुंदर भक्तिलता फरिहै ३ श्रुतिउ कहत पहिले श्रवणहिं को लोकहु में यह मत ढरिहै । प्रथम सुनिहि गुरु देवमंत्र जन तब भवसागर को तरि है ४ ॥

वार्ता। अब जीभ सम्हालने की रीति यह है जीभ का रोकना उचित है इसलिये कि इन्द्रियों में अधिक नहीं मानने वाली जीभ है और उसके उपद्रव बहुत हैं एक महात्मा से एक ने पूछा किससे बहुत डरना चाहिये उन्होंने जीभ को दिखा के कहा कि जेठ वैशाख के तपन में वे दाना पानी रहना सहज है पर झूठ बकना छोड़ना कठिन है इसलिये चाहिये जीभ सदा रोके इस पांच को विचार देखिये पहिली यह है कि जब आदमी सोके उठता है तो सब इन्द्रियां जीभ से कहती हैं हाथ जोड़ती हैं कि तू सीधी रहियो कि जब तू सीधी रहैगी तो हम सब सीधी रहैंगी जब तू किसी भांति टेढ़ी होगी तो हम लोगों में भी कजी आजायगी एक महात्मा की कहन है कि मनमें कठोरता तनमें ढिलाई भोजन में कमी और चित्त में गरमी हो तब जानै कि कोई बात जीभ से खोटी निकली है उसी का यह सब फल है दूसरा यह है कि जो बात परमेश्वर या परमेश्वर के दासों के या अपने काम जरूरी के सिवाय जीभपर न लावै उससे व्यर्थकाल जाता है और दुनियां के काम में भी कुछ काम नहीं आता एक महात्मा किसी तीर्थ को जाते थे राह में एक पेड़ देख पूछने लगे इसको किसने लगाया फिर पछताके मन से कहा अरे नीच जिस बात से कुछ काम नहीं उसको क्यों पूछना इतना कहिके मनकी ताड़ना के लिये एक चांद्रायण

व्रत किया अब इस काल के लोगोंने मनके बागको ढीली छोड़ दी है जिधर चाहै जावें तीसरे जीभ से बचावै क्योंकि बहुत बोलने में निन्दा और कटु बचन भी निकलेगा महात्मा ने कहा है कि झूंठ ऐसा कोई पाप भी नहीं है ॥

पद। झूठ में का ऐसी कलहै। जेहि सम नाहिं सब पातकहूँ मिलि अति बड़ परबल है १ और तरहको और तरह भा आतम अस छल है। आतम देव चुरावन मारण यामें अविचल है २ ॥

वार्ता। और महात्मों ने कहा है जो कहना सो करना जिसमें झूंठा न हो ॥

पद। जो कहना सो करना ॥ यह चाल अमीरी। खोटी राह खलककी जेती तिसपर कदम न धरना १ गनी ग़रीबों को कुछ देना कुछ न किसी का हरना। जिसने की यह खलक बनाई उसको हरदम डरना २ बदसों भी नेकी को करना बद रंगन सों न परना। रहनि ऊंख चंदन की लेनी धर्म खज़ाना भरना ३ सदा ग़रीबी

दिल में रखना धन मद सों न उछरना। इष्टदेव को खूब सुमिरि के भवसागर को तरना ४॥

वार्ता। और झूठ निन्दा एक बिजुली है सब भजन को जला देती है एक महात्मा का वचन है जो झूठ बोलता है और निन्दा करता है उसकी उपमा ऐसी है कि वृक्षों के सरिस काटकर सब अपने भले कर्मों को चारों ओर पहाड़ों में फेंकता है एक महात्मा से एक ने कहा उसने तुम्हारी निंदा की है सुनि उसके पास एक थाल मिठाई भेजी कहा मैंने सुना आपने अपने शुभकर्मों को मुझपर कृपा करदिया है इसलिये उसके बदले इस थाल को भेजा है चौथा एक महात्मा ने एक से कहा कि वह बात जीभ से मत कह जो तेरे दांतों को तोड़ै दूसरे ने कहा जीभ को मत खोल इसलिये कि काम तुझसे भला न करनेदेगी पांचवां खोटी चर्चा कोक आदि मानुषी काव्य आदि से बचाना चाहिये और भगवत्गुणगान में भी किसी पर चोटकर कुछ दृष्टान्त कहना हिंसा के बराबर है हृदय को फाड़ता है परमेश्वर ने एक जीभ दी और दो कान दिये इसलिये सुनो बहुत और कहो थोड़ा इसी में भलाई है॥

पद। ज्ञान इन्द्रिन के संग से मति विषय में

लिपटि रही है ॥ जियरा अजहूं जागै थोड़ी रजनी आयरही । महामोह का प्याला केला तन मनु सुरति भुलायरही १ इन्द्रिन के संग मति ठकुराइनि विषय सुखन में जायरही । तब दर्पण में मुरछा लागा अपने सुखहिं गँवाय रही २ सुखही कारण इत उत धावत आहवलाय समाय रही । पीछे ताके तौ सुख पावै आगे का बहराय रही ३ श्रुतिन जगाई मुनिन जगाई अपनी तनहुँ जगाय रही । देवदुहाई रामलगन बिनु जनम जनम पछि-ताय रही ४ ॥

पद । कबहुँ न जियरा थिरायल रामा पल एको । पांचन के जालन में भरसिकै माछी अस अरुझायल रामा १ कौन करार रहल साईंसे कौनी भीर भिरायल रामा २ कहत कहत नाकन दम आयल बहुतै मथ पिरायल रामा ३ मैं तो देवशरण में आयों यद्यपि जनम सिरायल रामा ४ ॥

वार्ता । और जीभको राम नाम रटन से छुट्टी न दो इसी से सुख पाओगे ॥

पद । जब लोकवेद दोउ छानेवहै । नामहिंको तौ मूल मंत्र तब जानेव है १ बरहेंदिन नामै उपदेशत बरुआमें गायत्री परवेशत तहौं नामहीं दीपक लेसत तंत्रदेवहू तानेवहै २ ॥

पद । श्याम तिहारो नाम तुमहुँते छबीलो ॥ तुमतो अक्षर ब्रह्म कहाये रुपन अक्षर रूप बनाये । नामै अक्षर रूप सुहाये यह राउर निजधाम दिन दिन चटकीलो १ नामै ते सब बीज बने हैं बीज मंत्र में देव सने हैं । नाम जपत आनंद जनेहैं सिद्ध होत मन काम रस चुअत रसीलो २ रूप जात पै नाम रहत है नाम ब्रह्म अस श्रुतिउ कहत है नामहिं ते पद अगम लहत है नामन काचो आम बड़ गरू गँभीलो ३ नामै ते विधि जगत रचे हैं नामहिं से सब रूप खचे हैं । देव दृष्टि से रंग

मचे हैं इहै कहत जगसाम नवरंगरँगीलो ४ ॥

पद । कपट तजि श्यामाश्याम भजो । सिख-वहिं पंछी कुंजन के ऊँचो क्यों काहि मोर चेतावत अब तो लाज लजो १ चटक चटक करु चटका बोलत साधन साज सजो । पीव देव रस कहत पपीहा दिन दिन रजोगजो २ ॥

वार्ता । और सवाद लेनेपर जीभ आदमी को बन्दर बनाती है ॥

पद । जीभ चटोरी चाट चटैगी काहेको श्याम को नाम रटैगी ॥ हाड़ सहाय आप खुद चमरी जड़ तारूसों जाय सटैगी । चणसवाद पाछे जो गंदा ऐसेन सों न हटी न हटैगी १ दगाबाज औ वैरी जनसों बारबार यह यदपि कटैगी । तदपि चखे रस चाखन हीकी याकी चाह बढ़ी न हटैगी २ रसन जान याही ते रसना नाम अस्थ गति येही अटैगी । यह अपराधिनि सजा हमारी बद बदरी

कब दैव फटैगी ३ श्याम महारस जिनके आगे देवसुधाहू दूर छटैगी । रसिकन सों इतनो जब जानै तबहीं रसकी मजा पटैगी ४ ॥

वार्ता । विरक्त को तो स्वाद का ध्यान भी न चाहिये एक साहूकार के घर फ़क़ीर गया कहा बाबा भूखा हूँ कुछ खिलाओ साहुने अपने रसोईदार से कहा इस फ़क़ीर के लिये कुछ बना लाओ खिलाओ उसने घुने पुराने यव पीस लेई बना आगे धरा साधुने चखके कहा एक कंकरी लोनकी तो देनीथी, साहु ने सुन रसोईदार से कहा तू कैसा बनालाया बोला आपने तो फ़क़ीर का नाम लिया यह नहीं कहा कि एक चटोरे आये हैं उसके लिये भोजन बना एक पद सुनिये ॥

पद । ऐसो ज्ञानिन को परनाम । मुखसे पूरण ब्रह्म बने हैं मनमें खेलत काम १ चाटन कारण लई फ़क़ीरी लोभ कोपके धाम । केवल बात भुँठाई के बल चतुरन में सरनाम २ द्वार द्वार कौड़ी को मांगत तनिक न जिनमें साम । भये कृतारथ कर्म छोड़िके बक बक आठो याम ३ सब विधि से मेरे

हितकारी इनको महूं गुलाम। देवदेव इनहूँ में खेलत साहेब सीताराम ४ ॥

वार्ता। और उस फ़क़ीर को देख फिर इस पद को पढ़ा॥

पद। तेरो आवागवन नहिं छूटै। ज्ञानकथौ यह ध्यान लगावो पकरि पकरि यम लूटै १ मूड़ मुड़ाय भये संन्यासी चाहसे नाता न टूटै। नालति ऐसे कपड़े रँगनमें कुमति गगरिया न फूटै २ माया प्रबल है आरिउ युग में जीवन को मल घूटै। ज्ञान कथै जिभियाके पालै नाहक माथा कूटै ३ जब या खलको खालक जानै पकरि रहै देवखूटै। आवागवन तबै है नाहीं अंश अंशी में जूटै ४ ॥

वार्ता। और स्पर्श गन्धका भी त्यागना उचित है अतर गुलाब आदि सुगन्ध और अंग मर्दनादि भी राग बढ़ावनेवाले हैं विषय लम्पट से भगवद्दासता दूर है ॥

पद। तौ क्या दास प्रभुका हुवा। मूढ़ जो तू विषय लम्पट कपट करि करि मुवा १ कर्मडोरिन

बँध्यो परवश परो जैसे सुवा । मुक्तिदायक संत पदको संग कबहुँ न छुवा २ बार बार करार करि करि गिरत फिरि फिरि कुवा । झारि दोउ कर जात जैसे हारि ज्वारी जुवा ३ जौन तम को डाटि जगमग भाग सूरज उवा । देव दुर्लभ जौन मुख पर नाम अमृत चुवा ४ ॥

वार्ता । भीतर की इन्द्रियों का रोकना बाहर की इन्द्रियों से कठिन है उसका डर भी बड़ा है उसके रोकने की राह भी बहुत कठिन और महीन है इसमें भी पांच बात याद रखना चाहिये पहिले परमेश्वर जानता है जो कुछ अन्तःकरण से गुप्त किया है और गुप्त जाननेवाले का भेद बड़ा कठिन होता है अंतःकरण की भलाई खोटाई सब जानता है दूसरे प्रभु रूप और विद्या पर दृष्टि नहीं देता अंतःकरण को देखता है अचरज की बात है तन जगत् के देखने की जगह उसे धो बनाय साफ रखते हैं और अंतःकरण प्रभु के देखने की जगह उसको मैला और इस बात से न डरता प्रभु उसके ऐसी खोटाइयों को देखता है कि जो आदमी उसको जान ले तो शरीर भी न छुलावे अपने बीच से निकाल दे तीसरे अंतःकरण राजा है

और सब इन्द्रिय उसके वश हैं जब राजा भला हो तो प्रजा भी भली हो जब कि बनाना सब इन्द्रियों का अंतःकरण के बनने पर ठहरा तो निश्चय है कि उसके बनने में बहुत श्रमकरै चौथे आदमी के वश में अंतःकरण एक उत्तम पदार्थों के धरने की बुद्धि जो सबसे बड़ी है यह लोक परलोक के भलाई का कारण है जिसमें क्षमा दया श्रद्धा तितिक्षा मुदिता करुणा मैत्री दीनता भक्ति ज्ञान वैराग्य संतोष विचारादि मोती और मणि हैं इसलिये उचित है कि ऐसे ख़ज़ाने को चिंता असूया तृष्णादि और काम, क्रोध, लोभ, मोहादि ठगनी ठगों से बचावै पांचवें का पांच भेद है पहिला यह कि शत्रु अविवेकादि उसी के अमल करने का इरादा करते हैं और हरदम अंतःकरणही के लेलेने के ताक में रहते हैं दूसरा यह कि संकल्प विकल्परूप खोटा दोषवाला मन एक हीरा है अब उसके बलसे विवेक विचारादि जो भले जवाहिर हैं उनका नाश हुआ चाहता है किसलिये वे उनके नाश होने जीवरूपी राजा दरिद्री हो नहीं सकता और खोटी मणि का दरिद्री करना धर्म है इसलिये मनरूपी जो खोटा मणि है उसको निकाल देना चाहिये तीसरा यह है कि काम क्रोधादि अंतःकरण के ऊपर सदा तीर मारते हैं अंतःकरण उनके तीरंदाजी सीखने का खाकतूदा है यह जगह विवेक के अमलदारी की है जोरावरी से उन्होंने तूदा बना

लिया है और विवेक को बल नहीं कि, रोक दे आँख की खराबी से बच रहे इसी भाँति जीभ दाँतों से दबाले अकेला जाबैठे तो बोलने की खराबी से बचे और अंतःकरण पर तो कोई युक्ति काम नहीं आती चौथा यह कि वह गुप्त है इसलिये रखवाली कठिन है पाँचवाँ यह कि काम क्रोधादि रोग जल्दी दौड़ते हैं अंतःकरण का रूप और ही कर देते हैं दुबला पीला मैला कुचैला याव । आस्तिकता वैराग्य विवेकादि स्वरूप से नास्तिकता मोह अविवेकादि रूप होजाता है यही दुबलापन है तमोगुण मैलापन और रजोगुण पीलापन है इसकी दवा केवल सत्संग और बारबार रोकना और सचतो यह है कि प्रभुके आगे रोवै करुणानिधान करुणा करो मेरी यह बड़ी विपत्ति है हरो केवल शरण का आसरा पकड़ले ॥

पद । अब सियजू के शरण भये सब टक टोरि लये । रसना कारण दण्ड कमण्डल मांगत जनम गये । ब्रह्म बनन के येई लक्षण झूठन के सिखये १ सीधो अर्थ न मानत श्रुति को खैंचि वाद मचये । बिछिला पद कुठहर नाहिं सँभरत बिन अवलम्ब हुये २ सांचे वेष द्वेषके मारे अन्दर

लोभ छये। तिनकें संगहु ते क्षण क्षण में पापहि को बढ़ये ३ जरौ बड़ाई जरौ ज्ञान वह जहां न मान छये। देव दुहाई दीन होत ही नित आनन्द नये ४ ॥

पद। चरण शरण मैं आई सियजी को खबर करो। कर्म ज्ञान वैराग्य बहाये इनते कुछहू सार न पाये। एक दीनता लई सहाये सन्तन यही सिखाई १ अहंभावको धूप बनायो मन्दिर में महमह महकायो। दास भाव तन मनमें छायो गुरुआसि राह बताई २ इन्द्रिन से वाही को भजिये मनको हार अमोलिक सजिये। छल चतुराई कपट को तजिये दृढ़ करि गही सिधाई ३ कोइ न मेरो बिगार करैया सब हितकार मातु पितु भैया। बिनुजाने मैं करउ लरैया देवल मुनि आसि गाई ४ ॥

वार्ता। दीर्घसूत्रता आदमी को खराब करती है सब रीति की भलाई खोती है पहिली खोटाई यह कि अभी तो बहुत

दिन जीना है फिर भजन कर लूंगा दूसरा यह कि माल के जमाका लालच करना और जगत् में भूलजाना जैसा कि बुढ़ापे के लिये दरिद्रता से डरता हूं उस समय कोई नौकरी चाकरी न कर सकूंगा और खाने पीनेसे दुःखी हूंगा इससे कुछ जमा करता कि जिसमें रोग आदि में काम आवे और इसी ढंगसे दुनियांकी प्रीति दिलाती है और लालचको बढ़ाती यहां तक कि ध्यान आता कि जाड़े में क्या खाऊंगा और गरमियों में क्या पहिनूंगा जो कहीं बहुत दिन जिये तो औरों का भरोसा करना पड़ै तीसरा हृदयका कठोर होता है और मौतको भूल जाता है दिलकी सफ़ाई और नरमी यमदण्ड आदि याद करने से होती है और जिसके मन में इन बातों में कोई न हो सफ़ाई नरमी कहां से हो एक महात्मा ने कहा है दुनियां तीन सांस की है एक सांस जो ले चुका गई सोगई दूसरी को क्या आश आवै, या नहीं बहुत लोग एक सांस से दूसरी तक नहीं पहुँचे तीसरी जो ले रहा है चाहिये कि उसी सांस में भजन सुमिरन जो कुछ हो सो करले दूसरी सांस तक जीने का भरोसा क्या है और भोजन के लिये सोच न करना चाहिये कि जिसकाल तक भोजन के लिये अन्न आदि धरते हैं तबतक रहैं या न रहैं और क्या मूर्खपने की बात है कि आदमी एक साइत और एक सांस का सोच करै और दूसरे सांस में चल

यह जो कोई भजन करनेवाला इन बातों पर ध्यान और दिन रात सोचा करै तो ये सब बातें आप से आप मिटजावैं अब दीर्घसूत्रता का उपाय विशेष लिखते हैं भरोसा करना जीने का कि अगले दिन अगिली घड़ी अगिले दम में इस काम को करूंगा यह भरोसा अपने को ईश्वर मानना है इसलिये जो सङ्कल्प करै उसी काल करलेना चाहिये पुराण में लिखा है कि एक ब्राह्मण गुरुनिष्ठा में एक था जप तप पूजा ध्यान और कथा आदि के सुनने में लगा रहता था दान में दूसरा कर्ण किसी भांति का कोई दोष उसमें न था एकदिन एक गोदान उसने किया मन में सोचा कि कल पात्र विचार किसी को दूंगा उसदिन न दे सका उसी घड़ी उसका काल आया शरीर छोड़ यमधाम गया यमने सङ्कल्पी गऊ न देने के बदले नरक में डाला उसकी हड्डी को उसका बेटा उसके गुरुके सङ्ग में होकर तीर्थ को लेचला एकदिन यमुना किनारे डेरा लिया मयेगुरु साथ के लोग थके थे सोगये कहीं से कुत्ता आया उस हड्डी की गठरी को खींच यमुनाके रेतमें लेगया रज के लगने से उस गोदान न देनेके पाप से छूट विमान पर चढ़ि उस ठांव आया और गुरुको पुकारा गुरु उसके चौंकपड़े कहा तू कौन है बोला मैं आपका चेला हूं नरक में गया था यमुना रजके हड्डी में लगने से उद्धार हुआ अब स्वर्ग को जाता हूं जब ऐसा बड़ा पाप है तौ कलके

ऊपर रखने से क्या फल है न सामर्थ्य हो थोड़ाही दे पर दे उसी दम दूसरा उपाय इस रीति से दीर्घसूत्रता करै कि कल तक प्रभु जिलावे और बुद्धि ऐसी रक्खें तो इस कामको करूंगा इसभांति का सोचना भी भजन के समान है और न होने में झूठा भी नहीं होता और खोटी दीर्घसूत्रता का ध्यान भी करना न चाहिये पर इस पाप से तब बचे जब सन्त चरण में प्रीति हो सन्तही लौं अपना ठिकाना जानै हिये में सदा श्रीसीताराम को बसावै और तप जप ज्ञान की आशा छोड़दे ॥

पद । भया क्या तौ तपसे तनक से जो न राम हिय बसे । बसे कोई केवल बक बक के बल ज्ञानपंथ में धसे । ज्ञान ध्यान कछु हाथ न आया धरम करम तौ नसे १ कोई आछो वेष बनाये विषय फंद में फँसे । इनसे कुछ नाहिं कहना सुनना कालसरप के डसे २ योग ज्ञान जप तप व्रत संयम राम नाम में ठसे । राम नाम ही महकि उठैगो हरिचन्दन से घसे ३ संत हमारे इष्ट देव हैं हम उनके पद खँसे । उनहीं में रति मति गति मेरी लोग बावरे हँसे ४ ॥

वार्ता । आदमी को बेटा जोरू धन घट्टीकर देते हैं इसीलिये इनसे बचावना चाहिये ॥

पद । कबहुँ न अपने सुखसे सोये । धन धंधा के घेरघार में माणिक से तन खोये १ नाते आइ लगे स्वारथ वश नाहि तको हम को ये । बिना गरजको काको पूछत भली भांति टकटोये २ कौड़ी कारण द्वार द्वार फिरि नीचन के मुख जोये । जनम जनम निज करम घास के बोझे शिर पर ढोये ३ देवसरित सों संत समागम तहां न मल मल धोये । राम लगन बिनु अंत समय में माथ हाथ धरि रोये ४ ॥

वार्ता । और विषयियों का जीने से मरना भला है ॥

पद । भलो यहि जीवनसे मरण । मोती रतन जड़ित कंचन के कंकण कर झमकाये । सपनेहु में कबहूं नहिं पूजे साधु संतके चरण १ शशिसे मुख चूमैं नित धरिकै मखमल ऐसे गाल । हरिचरणामृत

लियो न जैसे होते तारातरण २ बाहु दंड फिरि फिरि कै देखत रंगरंग के रूप। वहि स्वरूप से हेतु न उपजा जो सावन घनवरण २ कहँलौ कहौं न एकौ इन्द्री लागलि हरिकी ओर। अब जे वासुदेव के प्यारे तिनहीं की मैं शरण ४॥

वार्ता। अब मत्सरईर्षा का कथन होता है कोई महात्मा ने कहा है छः आदमी छः पदार्थों के योग से नरक में जाते हैं भाई बन्धु के सताने में सहाय करने से किसी को लूटते हों उनकी ओर होने, दूसरा राजा वे अपराध प्रजा के दण्ड करने और गांव के ज़मीदार घमण्ड से और सौदागर छलबल से और किसान मूर्खपने से और सब जगत् के लोग औरों की भलाई नहीं सहने से जो उपाधि कि संसार के लोगों को नरक में डालै उससे बचाना उचित है और यह ऐसी उपाधि है कि इसके ज़ोर से पाँच खोटाई होती हैं एक नष्टता भजन की एक महात्मा ने कहा है कि पराये का भला नहीं सहना नेकी को इस भांति खा लेता है जैसे आग लकड़ी को दूसरे भला नहीं सहनेवालों के तीन चिह्न हैं मुंह पर हाथ जोड़ै पीठ पीछे निन्दा करै और दुःख में देखै तो प्रसन्न होवे एक महात्मा ने कहा है जिस भांति अविद्या से डरके परमेश्वर से बचाव मांगना

उचित है वैसेही पराये की भलाई नहीं सहनेवाले से भी बचाव परमेश्वर से मांगना चाहिये तीसरा पराये के भला नहीं सहनेवाले की एक सांस भी सुख से नहीं जाती और की भलाई देख जबतक जिये जला करै चौथे अन्धा यहांतक हो जाता है कि प्रभु की आज्ञा को भी नहीं मानता पांचवां पराये की भलाई नहीं सहनेवाले का कोई मनोरथ सिद्ध नहीं होता और न उसका कोई सहाय करै एक महात्मा ने कहा है जिस किसी के कपट हो वह वेदीन है और जो निन्दक वह भजनानन्द नहीं और जो चुगुली खावै वह ईमानदार नहीं और जो कोई और की भलाई देख जलै उसकी कोई सहाय नहीं करता प्रभु भी उसको अपनी शरण में नहीं लाते तो उचित है कि इसको छोड़िये कि परलोक तो जाताही है लोक में भी कुछ काम नहीं आता अब मत्सर ईर्षा का उपाय कोई भजन करता या दान देता या कोई शुभकर्म करता हो वहाँ यह न चाहै कि उसके पास से वे सब जा रहैं पर यह चाहै कि जैसा वह करता है वैसाही प्रभु मुझ से भी करावै तो चिन्ता नहीं पर इस काल में लोग प्रायः पशु से होरहे हैं मत्सर छूटने का उपाय करना जुदा रहा सुनने की भी श्रद्धा नहीं रही॥

पद। नरतन तो पावो भाई नरतन कै न रूप

दिखाई । कबहुँ कुकुर बनि काटन दौरै कबहूं करत मुसाई । कबहूं बकुला ध्यानी कबहूं पर निन्दक सुकराई १ कबहूं सांप बनि जहरै उगिलत कबहूं काग कराई । कबहूं कामी कोक बनत है कबहूं करत खराई २ चौरासी के फेर फारमें सगरो जनम सिराई । नरतन के फेरै नहिं आवा धिगधिगधिग मनुसाई ३ सिया राम पद चिन्तन कबहूं सपनेहुमें न सुहाई । देव दुहाई मैं तो बिगरेउँ सज्जन लेहिं बनाई ४ ॥

वार्ता । कामना ऐसी खोटी कि भजन करनेवाले को बिगाड़ती है और अपराध में डालती है इसमें चार दोष हैं एक भजन करनेवाला बदले में किसी पदार्थ को मांगता है और रात दिन उसीका ध्यान करता है देर होने से भरोसा होने का छोड़दे तो उसके साथ भजन करना भी छूटता है दूसरे कोई पीड़ादे तो वह शाप देने में जल्दी करै यहां तक कि कोई उसके शाप से मरजावै तो बड़ेभारी अपराध में फँसे तीसरा मांगने से खाना पीना कपड़ा स्त्री आदि जो मिला उसमें लग के प्रभुको भूल जाता है चौथा प्रभु से न मांगना निज धर्म है उससे गिर पड़ता है और रात दिन धन खोजने में बह बह मरता है ॥

पद। चेतजा क्या दौराय रहा। बहुत लाख शखी भी न पाई कह कह मन दौराय रहा १ धरती खोदी पारा फूंका सागर में पउँराय रहा। जाइ मसान देवता साधी किसमत सों भउँराय रहा २॥

वार्ता। एक महात्मा से किसी ने पूछा फ़क़ीर को क्या छोड़ना चाहिये उत्तरदिया चाह, एककथा सुनाता हूं चित्त दे सुनो एक महात्मा ने स्वप्न देखा कि एक राजा स्वर्ग में और एक फ़क़ीर नरक में है हेतु विचारा तो जाना राजा विरक्तों के सङ्ग प्रीति रखता था और चाह रहित था इसलिये स्वर्ग पाया और फ़क़ीर राजाओं के निकट भोगहेतु वास चाहता था इसलिये नरक पाया और एक पद आपको सुनाता हूं ध्यान दे सुनिये॥

पद। दिलकी चाह न छूटी तौ खाक फ़क़ीरी। मान बड़ाई जादिन आई ता दिन किसमत फूटी १ अपने मों सारा जग देखत रसकी लूटा लूटी। यामति बिनु दिन दिन तन छीजै शिरकी कूटा कूटी २ पूरी बिपति महंती आई प्रीति राम से टूटी। सेवा पूजा सब ठगहारी मसल जालकी खूंटी ३

चेटक नाटक नट विद्या से सारी खिलकत जूटी ।
मिले न जो वसुदेव दुलारो प्राण सजीवन बूटी ४ ॥

वार्ता । अब कामना का उपाय लिखते हैं कामना प्रभु की कथा सुनने ध्यान आदि धरने प्रभु में प्रीतिकरने प्रभुप्राप्ति होने का इस भांति के और भी जो हैं सो करै तो भला यही है वह निष्काम भजन का साधन होगा ॥

पद । प्रभुपद अंकित अवध पुरीको रज कब अंगन लागैगो । संतन की महिमा सुनि सुनि कै कब मेरो मन पागैगो १ गुरुदेव शरण से सैन सहित कब बिखरि मोह दल भागैगो । रामरूप झलकावन मतिमें शुद्ध ज्ञान कब जागैगो २ ॥

पद । कब लागौंगो राम टहल में ॥ टूटी पुरानी झोंपड़ी रचिकै बैठौंगो अपने अहल में । जो सुख सड़ीगली झोंपड़ी में सो नहिं राजमहल में १ जाको रुचै सो रहो सुखी से धन की चहल पहलमें । मैं तो दम दम जात झुरानो कहरी यम की दहल

में २ हाथी चढ़ौ कोइ घोड़ा चढ़ौ कोइ बैठे घोड़ बहल में। जीव जीव को भोगत कब मैं जानोंगो एता सहल में ३ यही राह शुकदेव जनाई कथा प्रसंग पहल में। राम लगन कब लगि है कब मैं रहिहौं गुरुके कहल में ४॥

वार्ता। अब अहङ्कारके अवगुणको कहता हूं जिसने प्रभुकी आज्ञा न मानी और अहङ्कार किया सो नरकभागी है एक ने एक बड़े से पूछा कि नरक जाने की पहिचान क्या है जवाब दिया अहङ्कार और कठोर बोलना पुराण में लिखा है कि केवल पशुवध आदि छोड़ना अहिंसा नहीं जबतक कठोर बोलना न छोड़े और ईश्वर की ओर से आँख बंद और प्रीति रहित इतने युक्त जो हो उसको नरक जानेवाला जानिए एक दूसरे महात्मा का कथन है कि अहङ्कारी जबतक नीचों के हाथ से बे आबरू न होगा तबतक न मरेगा और लालची एक रोटी का टुकड़ा और एक घूंट पानी भी मांगने से न पावैगा तब मरैगा। अहङ्कारकी दवा लिखताहूं कि पहिले यह विचारै एक मैले पानी के बूँद से हुआ पेट में मलै भरा है और अन्त में सड़ या राख या कीड़े वगैरह जानवरों का आहार हो फिर मलका मल होगा इस

पर क्या ऐंठना कि हम बड़े जात और भला सुन्दर हमारा शरीर है और भले लोग हमारा सत्कार करते हैं॥

पद। नहीं जो तन से घिनि आई। घिग मानुषपन धिग यह विद्या धिग याकी सब चतुराई १ जो मल मूत भरो तन नीको लागत चंदन की नाई। तो तू कीट नरक को कोई देव दुहाई है भाई २॥

वार्ता। और अपने को पतित मानने से उसी काल में अहङ्कार दूर होगा॥

पद। पतित होने ही की है देर पावन को जिन हेर। यद्यपि पदसे पतित जीव यह यम को सहत दरेर। तदपि बड़ाइहि में नित बूड़त गहे मान समसेर १ करमन के वश में परि भरमत लख चौरासी फेर। तउ अपने के पतित न मानत दिन दुपहर अंधेर २ मंत्र क्रिया विधि हीन पंथ में परिकै है गय जेर। याते मैं हौं पतित उजागर मेरा भाग सुमेर ३ है तो पतित न मानत परिकै अहंकार के

घेर। देव दुहाई पतितपना को मानव बहुत करेर४॥

वार्ता। और छोटे बड़े सबकी मर्याद रक्खै और सन्मान किया करैं आप छोटा बना रहै॥

पद। मनमें श्याम लता लहराउ। अकठ पकठ के भाव छोड़िकै अब उपजौ अस भाउ १ जो श्यामता भानु मंडल से शशि मंडल में आउ। सोई श्यामता मनमें आई असि मति मोरि दृढ़ाउ२ परम ज्योति को उदय जहांते जाके बीच समाउ। घनमण्डल दामिनि सों जाको ब्रह्म उपनिषद गाउ ३ जाके हेतु देव ऋषि योगी परम समाधि लगाउ। सोई श्याम श्रीगोकुलवासी मति कोई भरमाउ ४॥

वार्ता। और अपनेसे कुछ अच्छा बने तो उसका अहङ्कार न करै उसमें भी दीनताही निकाल ले जैसा एक फ़क़ीर एक साहु के द्वार से जब निकलता तब साहु उसे बुलाता साधुराम इधर आवो कुछ देता हूं सो लो जब यह सुनि उसके पास जाता तब कहता कि तुझको कौन बुलाता है हमतो और को

बुलाते थे महीनों इसी भांति उसके संग खेल किया एकदिन उस फ़क़ीर के चरणों पड़ कहा मैं बड़ा पापी हूं कि आपसे महात्मा के साथ परीक्षा हेतु इतना उपद्रव किया आप कुछ जी में न लाये जब बुलाया तब आये साधु बोला कि यह बात प्रशंसा की नहीं है किसलिये कि इतना गुण तो कुत्ते से भी होता है मायः कितने अंश में अधिक भी इस पद में स्पष्ट है ॥

पद । हमसे भले ये तीनों खर शूकर श्वान । खान पान मिलत न नीको जूंठ कांठ सोऊ पछनीको । तेहू में अपने धनीको राखत बड़मान १ सब सुख जेहिते पावा सोई कीन्ह जो मनभावा । तेहि को न कबहुँ गावा मोअस को बेइमान २ खर शीत घाम सहत है नहिं स्वाद सुअर चहत है । संतोष कूकुर गहत है हममें का सान ३ नर तनु देवतौ मांगै सुर तनु से वैरागै । जेहि पाय योगी जागै सो मुफुत सिरान ४ ॥

वार्ता । एक महात्मा का शिष्य अहङ्कार से भरा था मान बड़ाई में पड़ा था नयनों से रात दिन सुन्दर नर के रूप

देखने की चाह रखता धन मिलने के लिये सदा यत्न में रहता एक दिन महात्मा ने कृपाकर उसकी ओर देख पढ़ा ॥

पद। ऐसी लगन को धिग धिग धिग कारन से जो फीकी परत। चारि दिना की रूप चांदनी देखत तलफत जीकी हरत। गई महक वह फूल झुरानो तब कोइ चाह न नीकी करत १ धन के हेत श्वान से दौरत यद्यपि भूपति छींकी करत। पीस जात नहिं चेतत कोऊ जांते में जस झींकी झरत २ गुणके कारण जातिउ खोवत मरि पचि कै गुरु सीखी चरत। पेट भरन को सो गुण बेंचत चाह चमारिन जीकी वरत ३ जेती प्रीति जगत की तेती स्वारथ के वश ठीकी परत। देव सुधासी राम लगन यह जरनि बरनि सबही की हरत ४ ॥

वार्ता। और इस पद को पढ़ा ॥

पद। हशमत को चाहता तू किसमत बिना लड़ाये माथे जो रेख ताको किसने कहां मिटाया १

किसमत न माल कुछ है करने से सब बनेगा यह रंग जाहिलों का किसने तुझे चढाया २ हनोज तक गरीबी तेरे में कुछ न आई शेखी गई न तेरी कुत्तों से तनु कटाया ३ रिंदों को मारता औ गौवों को पालता जो । उस देव को न जाना पढ़ि पढ़ि के शिर छटाया ४ ॥

पद। और नहक ही साध कहलाया मति तिय इन्द्री लड़के तन घर इनहीं से मन बहलाया १ काम क्रोध मद लोभ मोह सों नित अपने को चहलाया २ क्यों न देव धरम करि मन को राम रंग में नहलाया ३ ॥

वार्ता । फिर महात्मा ने शिष्य से कहा जात विद्या बड़ाई रूप जवानी के अहङ्कार से तू लद रहा है बोझा उतारने के लिये कहता हूं आज जिसको अपने से भरभष्ट पावै उसको ला चेला सुन चला बाहर जैसे हुआ कुत्ते पर दीठ पड़ी चाहा कि उसे गुरु के सामने ले चलें इससे निषिद्ध जलदी और न मिलैगा इतना मन में आतेही आकाशवाणी हुई कि तुझ से कुत्ता अच्छा है

क्योंकि अपने मालिकके द्वारपर उसके भरोसे पड़ा रहता है और तू वेष बना प्रभु का कहला द्वार द्वार धन के लिये घूमता है शिष्य लज्जित हुआ आगे चला विचारा कि शौचादि से छुट्टी करिकै फिर निषिद्ध ढूंढ ले चलें एक मैदान में गया उस काल मन में आया कि विष्ठा सब से निषिद्ध है इसीको ले चलना चाहिए फिर आकाशवाणी हुई कि यह निषिद्ध तो तुझ से हुआ है पहिले तो वह शुद्ध अन्न रहा इस के सुनने से बहुत लजा गुरु के पास आया इस वृत्तान्त को कहा सब अहंकार छोड़ा और अपने पापों से डर गुरुजी के सम्मुख इस पद को पढ़ा ॥

पद । रोम रोम अपराधी मैं प्रभु कैसे बदन देखावौं । परात तुम्ह सम आपुइ बनिकै तुमकहँ नहिं खतिआवौं १ विषय सरप तिरशूल वचन विप विषम नयन झलकावौं । पर हाथन से अर्द्ध चन्द्रमा नित माथे पर पावौं २ यज्ञ शत्रु तिहुँ पुर को वैरी तामस कर्म बढ़ावौं । लोग जटन को मुकुट शीश पर तहां गंग लहरावौं ३ काल अतीत फिकिरि नहिं तनिकौ पर काम नाहिं नशावौं । ऐसे देव देव बनि आपुइ आपनि हँसी करावौं ४ ॥

वार्त्ता । अब महाराज अपनी ओर देख अपना ज्ञान उपदेश कीजिये जिससे फिर अहंकारादि दूषण न लगैं गुरु बोले ॥

पद । श्याम लगन से श्याम चरण में मनको खूब रचाना है । तीख वचन सुनि गरम न होना उसको समुझि पचाना है १ अपना रतन कुसंगति मों परि चोरों सों न ठगाना है । रतन पारखी संतन सों मिलि खोटा खरा जचाना है २ नटबंदर सों लालच मों फँसि नाहक जीव नचाना है । साधन करि हिम्मत को तजना यह तो सिरिफ लचाना है ३ झूँठ कपट छल तजिकै बंदे सीधी रेख खचाना है । वासुदेव चरणन को भजि कै घरमों रंग मचाना है ४ ॥

वार्त्ता । जब सियाराम को तू हिय मों बसावैगा तो वे और साधन के सुख पावैगा ॥

पद । जिन्ह के हियमें सियराम बसे तिन साधन और किये न किये १ भूत दया जिनके मनमें तिन

कोटिन दान दिये न दिये २ जिन सन्त चरण रजको परसा तिन तीरथ नीर पिये न पिये ३ जिनके सत भाव नहीं मनमें ते देवहु होय जिये न जिये ४ ॥

वार्ता। फिर शिष्य बोला कि आपके कृपा से अब मेरा दुःख भागा गुरु बोले ॥

पद। सिया राम लगन जो लागै। देखौ कैसे न दुखवा भागै। रामराम के रटते रटते कैसे न यह मन पागै। तब सिय जू की करुणा होते कैसे न जियरा जागै १ संतचरण को सेवत सेवत कैसे न संशय खांगै। कहो न कैसे जाड़ रहैगो तापत छिन छिन आगै २ नाम सुधा रस चीखि चीखि कै जी स्वरूप अनुरागै। महानीच स्वादन से सो नर काहे को जिभिया दागै ३ सदा देवारी जिनके घरमें मची रहै नित फागै। होहुँ दास तिनके दासनको पतित यही वर मांगै ४ ॥

वार्ता। फिर शिष्य ने रामरूप में मस्त हो यह पद पढ़ा॥

पद। तेरी सूरत मन में गड़िगई। देखत रूप झलक दूरिहि ते मेरी अँखिया लड़िगई १ पूरण राम दया से नीकी पांसे की गति पड़िगई। मानों कंचन के भूषण में हीरा मोती जड़िगई २ राम तिहारी मूरति देखत कर्मनकी गति अड़ि गई। माया गुण सुभाव कालहु की अँखुरी पँखुरी झड़ि गई ३ रामसनेह सुधा रस चीखत विषयन कीरति खड़िगई। रामदेव तुम्ह मैं अनुचरहौं अब तो ऐसी मढ़िगई ४॥

वार्ता। अब झूंठा अहंकार छोड़ा सच्चा अहंकार सदा करौंगा कि मैं अनुचर हौं औ रघुनाथ मेरे स्वामी हैं तीरथ व्रत आचार यज्ञ तप इन सबका अहंकार छोड़ केवल प्रभुका गर्व कीजिये॥

पद। श्याम तुमहीं तारन हारे। कलिमें साधन किये न बनत मन्त्रन के सुरती न यथारथ नाहीं जात उचारे। तबते मंत्र वज्र सम बनिकै सगरे

काज बिगारे १ सुलभ सुसंगम नाम सबरे चाहिउ श्रुतिन पुकारे। सो जिभिया के भावत नाहीं नित परदोष उघारे २ ज्ञानयोग कै चरचै नाहीं चंचल मन से न्यारे । राति दिवस यहि चंचल मन को केवल विषय पियारे ३ कलिके रूप कंसको प्रभु तुम आपुइ जाइ पछारे । ऐसी इश्क पर मैं बलिहारी बाजत देव नगारे ४ ॥

वार्ता । और रघुनाथ में कोई सम्बन्ध का अहंकार करना जगत् के सम्बन्ध का अहंकार मिटवाना चाहिये ॥

पद। लगउ राम तोसे अब नतवा । चाहौं तेहि देवता को पूजौं पूजि जात सियराम । केऊ जानौ मैं जिनि जानौ यहई सब कर मतवा १ एहर वोहर नात लगौले दिन दिन बाढ़ै ताप । अंध भेढ़िके सूझत नाहीं काल लगाये घतवा २ का केउ करिहि कराइहि जगमें करता धरता राम । सियाराम की अंश कलाबिन डोलि सकत नाहिं पतवा ३ राम-

भजन के नर तन पावल विषय करे के नाहीं । देव दुहाई राम भजन बिनु धिग धिग धिग नर गतवा ४ ॥

वार्ता । एक राजा भरनभूला फूलसा फूला सिंहासन पर बैठा रहता और वस्त्र पहिरे मनभाये और भांति भांति के सुगंध लगाये इन्द्र कुबेर से बड़ा मानता और सदा वेश्या आदि के गान तान सुनता एक दिन उसके निकट एक फ़क़ीर आया और इस पद को गाया ॥

पद । क्या हो रहा है रंग धिग धिग कहत मृदंग पूछत मजीरा धिग है किनकों देवनटी कह कर गाहि इनको किटकिटात मुरचंग ४ ॥

वार्ता । और इस पद को पढ़ा ॥

पद । नरक मिट्टी सोनेकी देह । कसबिन किसकी सगी हुई है धन लेने तक नेह १ अहमक तहँ धन यौवन खोवत ज्यों सुबीज की रेह । वासुदेव पद क्यों नहिं सुमिरत जो सावन घन मेह २ ॥

वार्ता । और रावण सहसबाहु आदि जो इन्द्रहू को डाटते

उनहूँ को काल खायगया नृ न्धामाल है आन राजा वलि नाच ग देखता है गूर्मणी जन सनारि भागनी यमदूतन के लातन से अब पेट की रक्षा करने में बहुत बड़ी लड़ाई है और उसका उपद्रव बहुत है पेट सब अपराधों का और शुभकर्मों के उपजने का ठांव है सब अंग में बल और निबलई पेट ही से पैदा होती है इस लिये जो पुरुष भजन में बांधे पहिले पेट की रखवाली करे पहिले निषिद्ध पदार्थ जिसको शास्त्र निषेध किये हों उसे छोड़ै जैसे लहसुन प्याज लसोड़ा काहो निशा का तरबूज सफेद बैंगन लाल मूली गोल कद्दू सूकर किलवा ससेत मसूर आदि और वैध पदार्थों को भी थोड़ा खावै बहुत खाने से निषिद्ध के बराबर होजाता है और जो निबलों को दबाके खाते हैं वह अपने पेट में आग डालते हैं वह अवश्य नरक में जायँगे और उन लोगों को भजन करना तो जुदा रहे चर्चा भी नहीं भाती एक महात्मा ने कहा कि भजन परमेश्वर के भण्डार के भीतर है और दरवाजे की कुञ्जी विधिपूर्वक भोजन है जब कुंजी न हो तो दरवाजा नहीं खुल सकता बे दरवाजे के खुले भीतर का पता नहीं मिलता एक महात्मा ने कहा है निषिद्ध के खानेवाले का उपास जागना सब व्यर्थ होता है कि वे जागरण करैं तो उनके जागने की सेवा और जो उपवास करैं तो भूख प्यास की सेवा कुछ फल नहीं अर्थात् निषिद्ध पदार्थ खानेवाले का

पूजा सुमिरण जप तप सब व्यर्थ हैं अधिक वैध पदार्थ के भोजन के लिये रोग हैं और दश उपद्रव हैं पहिला अधिक खाने से हृदय कठोर होता है और प्रकाश का नाश एक महात्माने कहा है कि अंतःकरण खेती के समान है सो अधिक पानी से बिगड़ जाती है दूसरा बहुत भोजन सब इन्द्रियों के लिये खोटाई जब आदमी का पेट भरजावैं तो उसकी आंखों को वाहियात देखने और कानों को सुनने की और जीभ को अल्लबल्ल बकने की चाह होती है भूखा रहै तो सब इन्द्रिय ठिकाने में रहैंगी एक ने कहा कि भूखा रहै सब इन्द्रिय पापके ओर से दबी रहैं जो भरजावें तो सब इन्द्रिय पापों की भूखी होवैं जो भोजन अविधि खाये हो तो सब इन्द्रिय पापकरने में तत्पर होंगी खाना सब इन्द्रियों के क्रिया उत्तम मध्यम का बीज है पेट खेत है तीसरा बहुत खाने से बुद्धि कम होती है पेटके भरने से बुद्धि की तेजी जाती रहती है एकने कहा है परलोक या दुनियां के किसी काम में लगना हो तो चाहिये भोजन न करे जबतक उस कामको न करले चौथा बहुत भोजनसे भजन कम होता है जब आदमी बहुत खावेगा तो सुस्त होजायगा और नींद घेर लेगी फिर कितनेही युक्ति करै पर न कर सकेगा नींद में मुरदा के सम पड़ा रहैगा कदापि कुछ किसीभांति करैगा भी तो सवाद न देगी एकने कहा है जिस समय आदमी का पेट भरै

तो आपको अपाहिज जानें एक महात्मा ने अविद्या को देखा कि उसके हाथ में फंदे हैं उन्होंने पूछा कि यह क्या है कहा कि यह चाहों के फंदे हैं जिनके जोर से मैं आदमियों का शिकार करती हूं महात्मा बोले कि इनमें कोई ऐसा फंदा भी है जिसमें मुझे फँसाले उसने कहा नहीं पर एक रात तुम बहुत खाकर सुस्त होगये थे उस समय हमने संध्या करने से रोक रक्खा था महात्मा बोले कि अब मैं पेटभर कभी न खाऊंगा अविद्या बोली कि मैं भी सच न कहुंगी यह उनकी दशा है जिन्होंने उमर भर में एक रात अधिक खाया था और उनकी क्या दशा होगी जो उमर भर में एक रात भूखा न रह सके और भजन करने को लालच रखते हैं एक ने कहा है भजन करना एक पेशा है और उसकी दूकान एकान्त है और उसके हथियार भूख पांचवां बहुत भोजन करने से भजन की शोभा जाती रहती है एक फ़क़ीर ने कहा जिस दिनसे हमने घर छोड़ा पेटभर भोजन न किया ठंढापानी प्यासभर न पिया एक दूसरे ने कहा मेरे जान सुन्दरता उस समय है कि पेट पीठ से मिला हो छठें बहुत भोजन से निषिद्ध भोजन करने लगैगा इसलिये शुद्ध अन्न बहुत कठिन से मिलता है अशुद्ध बहुत मिलता है सातवें बहुत खाने से अपने उद्यम से छुट्टी नहीं होती कुछ देर खाने फिर बनाने खाने और पचाने में दिन जाते हैं आठवें मरते

समय जितना अच्छा भोजन किया है उतनी ही पीड़ा होगी नवें बहुत भोजन से पुण्य की कमी होती है अपने भोग को दुनियांही में पूरा करि लिया एक महात्मा की कथा है प्यासे थे पानी मांगा एकने शरबत दिया उन्होंने पिया तो मीठा और ठंडा पाया उसी समय मुँह से अलग किया और आह खैंची उसने कहा पानी तो मीठा और सरद है कहा जो परलोक का डर न होता तो मैं भी तुम्हारे खाने पीने में साथ करता दशवां पेट भर भोजन यद्यपि ब्राह्मणादि भले लोगों से और उनकी प्रसन्नता के साथ लिया है पर उसके बदले में अपना सुकर्म देना पड़ेगा और कदापि निषिद्धों से लिया तो नरक जाना पड़ेगा भिक्षा ब्राह्मण के रहते क्षत्री की न ले क्षत्री के रहते वैश्यकी न ले वैश्यके रहते शूद्र की न ले शूद्रान्न प्रायः निषिद्ध है बाकी तीनि वर्णकी जो देखने में उनकी चाल भली जाने भिक्षा लेले न जाने न ले अंत्यजवर्णका अन्न कदापि न ले अशास्त्रीय हिंसककार्मी अन्न आगके बराबर है कदापि भूलके खालेवे तो प्रति कवर अष्टोत्तरशत भगवन्नाम स्मरण करै और प्रसन्नता से भिक्षा ले पर हठकर न मांगै जिसमें देनेवाले के मनमें कलेश न होवे भजन के विधिपूर्वक भोजन करने में भी नोन हरामी है इसलिये सदा भजन करना चाहिये और भजन बहुत भांतिका है पर कलिकाल में नाम छोड़ ध्यानादि सब कठिन हैं॥

पद। व्यापा कलियुग का शाका सवपुरुषारथ थाका लोग ईश्वरहि के नाहिं मानै श्रुतिकी कहीं कथा का। वापहि वाप न कहै सो कैसे कहि है काकहि काका १ काम आदि भट छेकि रहे हैं धर्मपंथ को नाका। इनहिं मारिकै निबहि जाइ जग को अस जनमा बांका २ दिन दिन चोर अधरमी वाढ़े परधन को जिन्ह ताका। जो कोउ चढ़ै धर्म के पथ पर परै ताहि पर डांका ३ जिन अपनी रसना यह रोकी नारी मुख नहिं झांका। राम नाम को खरग लिये ते निबहे हांकी हांका ४॥

वार्ता। और अब इस काल में भिक्षादि सब साधन का निबाह कठिन है केवल नामही में सुगमता समझी जाती है॥

पद। मन रमि रहु रामझोपड़िया में। नाहीं तो कालदूत जिउ लेहैं एकै एक थोपड़िया में। जगके सुख से तृप्त न कोई जस माटी के पोटड़िया में १ यद्यपि अमिट अंक हैं विधिके जो कुछ लिखे

खोपड़िया में । का न बनैगो शुद्ध भाव से जस सुर बसत खोपड़िया में २ राजमहल में सो सुख नाहीं जो खरपात झोपड़िया में । सो रस झरीबेर में नाहीं जो रस मिलै कोपड़िया में ३ इष्टदेव सिय रामहिं भजु जिनि भूलै वात चोपड़ियामें । अलख कथन में का सुख पैहै लेल गणेश थोपड़ियामें ४ ॥

वार्ता । एक महात्मा ने एक से कहा जगत् के लोगों के साथ प्रीति और मनके संकल्प में उनके तुल्य करोगे पापी होगे परलोक खोबैठोगे झूठ सब पापों का बाप है उसी का इसकाल में प्रताप है ॥

पद । कलि में कतहूँ न देखा सांच सकल कपट को नाच ॥ पुरुष बने कुलटानारी से कपटिन में बड़ पांच । सब जानत येई नहिं जानत परे भरम की खांच १ बात बात में छल चतुराई करत सोउ अधकांच । लोक लाज डर दूनों तजिकै रचत चमारी ढांच २ इनकी गति लखि त्रियाचरित सब

गुरुले मानहुँ वांच । इनकी संगति से सहिलेइहि सब झूठन की आंच ३ इनको रंग रहो नित येते कबहुँ न मारी टांच । देव खेलारी को छलही में रंगरँगीलो मांच ४ ॥

पद। जरौ कलियुग की चतुराई । झूठन की पाटी लिखि पढ़िकै भाइ गई मन धतुराई १ बालक वृद्ध तरुण सबही को अतुराई औ बतराई । रामरंग में कबहुँ न आवत देवनहूं से शतुराई २ ॥

वार्ता। और जगत् के लोगों से वैर करोगे तो लोक पर-लोक के कामों को वे बिगाड़ैंगे दुःख भी देंगे तुम भी उनकी शत्रुता में रात दिन भजन सुमिरण छोड़ लगजाओगे और उनकी करनी तुम्हारे मरने बाद जो करनी वे लोग करैंगे उस-को ध्यान करो जब कि मुरदे को जलाया जल में बहाआते कुछ दिन पीछे भूल जाते चर्चा तक भी नहीं करते जैसे कबहूँ न देखाथा और सदा साथी परमेश्वर के सिवाय दूसरा नहीं है तो बड़ी भूल है अपना ऐसा अच्छा काल मतलबी बे प्रीति-वाले जगत् के लोगों के साथ खोवै सदा साथी सदा प्रीतम ईश्वर को भूल जावे ॥

पद । सभी कोई मतलब ही के यार नाहिं तो करत बिगार ॥ भानु कमल से प्रेम सही पै जब लगि वह गुलजार । टूटे पर रवि क्षार करत हैं पानिव करत विकार १ जीव परम प्रिय देहहु को लखि गलित खलित लाचार। त्यागन चाहत पुनि पुनि तनको करम होत रखवार २ भाव भक्ति के भूखे ईश्वर जनधर हैंगत उदार। भाव बिना तो नरक पचावत गीता कहत पुकार ३ पूरण काम श्याम कारण बिनु भगतिन के हितकार। देवदृष्टि से देखिपरे अब सांवरिया के द्वार ४ ॥

वार्ता । जगत् के लोग सब जगह बसे हैं इनसे वैराग्य चाहिये और इसीभाँति स्वर्ग सुखभी मिटनेवाला है इसलिये उससे भी और मुख्य वैराग्य बहुत दूर है उसका स्वरूप इस पद में लिखा है ॥

पद । जगत में वह विराग है दूर । जामें राम चरण रति उपजै छायरहै भरिपूर १ चणक विराग

मसानी उपजै अन्त घूर को घूर । वचन विराग होत पढ़ि गुनि कै अंदर उमड़ी धूर २ मनको निरमल करत करम ही तदपि विषय रस भूर । पाय नवतई प्रबल होत मन ज्यों सरिता को पूर ३ जो अनुराग विराग वही है है ज्यों मिसिरी को चूर । देवदृष्टि से यह लखि लीजै करिये न हूराहूर ४ ॥

वार्ता । जो राम चरण में रति न उपजी तो जीवन वृथा है ॥

पद । नाहक ते जीवत हैं जिनकी न श्याम चरण में रति ॥ बिगरि रहा यह लोको जिनको का कहिये परमारथ गति । भये न इतके भये न उतके बड़ी भईर रतनकी क्षति १ छेरी गल थन पीठ ऊंटकी रचि बिरथा विधि की मेहनति । धरती भार भये जीयत लौं मरि सहिहैं यमकी सासति २ सब अंगन से हरिको भजिये कबहुँ न उपजी ऐसी मति । राजपाट बिरथा धनविद्या जीवन में दम दम

लानति ३ श्याम कुंज घन श्रीयमुना रज जिनकी महिमा अतिते अति । जहँ विहरत श्रीदेवकिनन्दन जामे बनत अपर्तिन की पति ४ ॥

वार्ता । और भगवत् लगन में विघ्न करनेवालों से वैराग्य करना चाहिये और रामसनेहियों से सनेह करना चाहिये ॥

पद । घरको गोड़ोई हम छोड़ो । श्याम लगन के वैरी जनन से नातो तृण सों तोड़ो १ मरमिन से कछु दिन संगति करि दुर्मति मांड़ो फोड़ो । करम लिखा दुख सों सकारि कै ब्रह्म अंक जनु खोड़ो २ नाम प्रताप काल कंटक मुख चरणामृत से मोड़ो । व्रजकी रज बिनु गति न दूसरी लागो तन को होड़ो ३ आये बिघन अनेकन तिनको नेम धरमसे बोड़ो । देवकिसुत के चरणकमलसों मनको तागो जोड़ो ४ ॥

वार्ता । अब मनकी विशेष दशा लिखी जाती है एक महात्मा ने कहा शिष्य से खोटे संकल्प पर दृष्टि करना मन के सुधारने के लिये एक दवा बहुत है कामके समय चौपाया क्रोध

में राक्षस लालच में कुत्ता भूख में देवाना पेट भरे मस्ताना बन जाता है ज़रा सा दाना पावै तो लोगों को सतावै भूखा रहै तो शोर मचावै मृत्यु चिन्ता नरक पीड़ा स्मरण कराने से भी अपने संकल्प को नहीं छोड़ता पर रोटी न दो तो कामादि का कुछ संकल्प छोड़ता है इससे आदमी भूखा न रहै बड़ा शत्रु है हमारा काम करदेना है यारो! फेर आगे कोई मानो या न मानो एक महात्मा ने कहा है कि मेरा मन मेरे साथ झगड़ने लगा कि तीर्थ को चल मैंने कहा कि तू अच्छा कहता है पर मुझसे यह नहीं होसकता किसलिये कि तू एकान्त से घबरा के कहता है इस बहाने लोगों से मिला चाहता है कि लोग बड़ाई और प्रतिष्ठा करैं इसलिये न जाऊंगा उनने मान लिया मैंने परमेश्वर से मांगा कि हे कृपानिधान! ऐसी कृपा कीजै कि इस मन की झुठाई और भुलावे को जानूं सो गया तो क्या देखता हूँ मन कहता है तू मुझको दिन दिन संकल्पों से रोक कर नई २ रीति से मारता है कोई उस भेद को नहीं जानता हम फ़क़ीर हो जावें तो तेरी बड़ी बड़ाई हो लोग महात्मा कहैं तब जाना कि भुलावा देता है इसी तरह बहुतों से तालाब धर्मशाला आदि बनवाता भजन करवाता है कि तुम्हारा बड़ा नाम होगा भले लोग प्रतिष्ठा करैंगे यह सब मनका धोखा देना है बड़ाई प्रतिष्ठा की चाह न रहै तो यह सब काम उत्तम पद

देनेवाले हैं एक महात्मा की कथा है उनके शिष्य चारों ओर बैठे रहे महात्मा ने आह मारा और रो दिया शिष्यों ने पूछा कि कौन सी बात है कि आप से अचाही धीर व्याकुल हो रो उठे कृपाकर कहिये बोले मेरे मनने आज हरद्वार जाने का संकल्प किया है भजन काल में शिष्य सब बोले महाराज यह तो बड़ी उत्तम बात है इसमें और प्रसन्न होना चाहिये महात्मा बोले आज स्वतन्त्र हो इन्हों ने भली बात का संकल्प किया है तो कल खोटी करने में क्या अचरज इस से घबड़ा कर रोये जानने की बड़ी बात यह है कि भजन के दो बड़े भाग हैं एक स्मरण पूजन ध्यान आदि करना, दूसरा अपने को पापों से बचाना यह भाग आधा बचाना पापों से भजनानन्द के लिये उस आधे से कठिन है इस लिये पहिली सीढ़ी के अर्थात् सीखने वाले भजन के जप तप स्मरण में लगे जाते हैं दिन चान्द्रायण आदि व्रतों से काटते हैं रात जागके ऊपर के भजनों में उनका काल जाता है और जो लोग ऊपर की सीढ़ीवाले हैं भजन में मग्न हो रहे हैं उनको सब घड़ी यही ध्यान होता है कि मनको और ओर प्रीति करने से बचाइये जो अपना प्यारा प्रभु है, उसकी ओर लगाइये सबका सार मन रोकना है ऊपर की सफाई कुछ काम नहीं आती लिखा है कि कहीं दूर से दो ब्राह्मण प्रयाग आये एकको एक वेश्या

सुन्दर पकड़ अपने घर लेगई दूसरे ने माधवजी के मन्दिर में आय पूजा में रात बिताई वेश्या के घर जो गया रातभर यही सोचता था कि हम कैसे अभागे हैं प्रयाग में आ खोटे संग में फँसे धन्यभाग मेरे साथी का आज त्रिवेणी नहाया हो माधवजी को पुष्प धूप दीप नैवेद्य करके लाड़ लड़ाया हो इसी ध्यान में रात बिताई पूजा करनेवाला यही ध्यान में था धन्य भाग्य मेरे साथी का आज उस रूपवती रसमाती के साथ आनंद करता होगा इसी ध्यान में रात गई सवेरे दोनों मिल किसी ओर चले उसी समय वज्र पड़ा दोनों मरे वेश्या वाले को विष्णुदूत ले चले और पूजावाले को यमदूत वह बहुत घबराया और कहा रात भर वेश्या के घर रहा उसके लिये विष्णुदूत आये और हम रात भर माधव जी के मंदिर में जाड़े पाले में ठिठरे इसका यह हाल यमदूत बोले तेरा मन रात भर वेश्या के घर रहा उसका मन माधवजी के मंदिर में ऊपर से मन का काम भारी है दूसरी कथा एक महात्मा ने एक भजनानन्द से कहा बहुत लोग उपास से प्रीति रखते हैं बहुत देने में बहुत संध्या में पर तू व्रत बहुत बात करने का रख देना पीड़ा न देने का संध्यावंदन मन रोकने की जब यह जाना गया कि आप को पापों से बचाना यह भाग पूजा सुमिरन करने के भाग से कम नहीं है जिसको दोनों भाग प्राप्त हों उसकी

भली भांति बन जावै जो दोनों न करसकै तो पाप न करना यह आधा भाग अवश्य करै उसके करने से दूसरा भाग आप से आप होने लगेगा जो पाप को न बचावैगा तो दोनों भागों में घटी उठावैगा कोई कठोर बात किसी को कहेगा या सज्जननिंदा देवनिन्दा करेगा तो जन्म भरके भजन सुमिरन मिटजायँगे एकने एकसे पूछा भजन करना अच्छा कि पापों से बच रहना अच्छा है जवाब दिया यहां उपमा रोगियों की है रोगी के इलाज के भी दो भाग हैं एक दवा दूसरा परहेज जो दोनों करै तो रोग आपही अच्छा होगा जो दोनों न कर सकै परहेज करना भला है बे परहेज कोई दवा फायदा नहीं करती परहेज करना बे दवा के भी फायदा करता है इस दृष्टांत से पापका छोड़ना उत्तम है मनुष्यों को चाहिये कि पाप छोड़ने में बहुत यत्न करैं मुख्य तो यह है कि मनको सदा रोकैं मनके रुकने से पाप आपही से रुक जायगा एक महात्मा को राजा बहुत मानने लगा और भांति भांति के वस्त्र और भोजन भेजने लगा सारे शहर के लोग हाथ बांधे खड़े रहते जो कुछ आज्ञा करता उसी भांति करते साधु विवेकी था एकदिन अपने मनको ध्यान धर देखा तो और ही पाया पारे से अधिक चंचल नजर आया महात्मा को बहुत ग्लानि हुई इस पद को पढ़ा ।

पद । मनकी मनही माहँ रही । सिया रामको

किंकर होइहौं जियमें धरो यही । किंकर भये काम कंचनके दिन दिन विपति सही १ सेइहौं साधु सन्त चरणामृत ऐसी वहुत चही । जन्म गयो कामिनि मुख चूमत मुखमें लार वही २ सियाराम पद चिंतन करिहौं बैठि एकन्त कहीं । जन्म सिरान्यो विषय चिन्तन में कुछ नाहिं ज्ञात कही ३ देव शरीर पाय कै अबनौ देखिहौं अनभ सही । बेचत फिरै कवन दर दरमें काहि कै दही दही ४ ॥

वार्ता । इतना कहिकै चुपचाप श्री अवध को चल दिया और वहां जाकर दूसरे तीसरे सूखी रोटी का टुकड़ा खा रात दिन राम नाम रट रहने लगा एक दिन उसको दूसरे महात्मा ने देख वहुत सत्कार से कहा धन्यहौ और इस पद को पढ़ा ॥

पद । जगत में तीन मतवाले । हाल मस्त कोई माल मस्त है जहरी चश्म के कोइ घाले १ चश्म देवाना दर दर घूमै माल मस्त धनके पाले । हाल मस्त कोइ राम देवाना जिसकी जीभ पड़े छाले २ ॥

वार्ता । यह सुन वह बोला ॥

पद। बहुत मोहिं ठगलेसि ठगिनिया नटखट जैसे रंगिनिया । कुछदिन खेले खेल कूद में कुछ दिन काम जगाय करमनकी अँगुरीमें डसलेसि जैसे कारी नगिनिया १ वेष भये विषया के कारन नेम धरमके नाहीं परनारी की कौन चलावै बचै न धीय भगिनिया २ वेद पुराण कुरान पढ़ेसे दिन दिन बाढ़े मान इनमें छपिके रहलि बाद मिसि उहई परम दगिनिया ३ केहू देवता को का मानो को ऐसन समरत्थ राम नाम अघ काटै जैसे गंगा खूड़ि अगिनिया ४ ॥

वार्त्ता । अब महाराज आपकी कृपा से अच्छा हूं यह सुनकर दूसरे महात्मा ने इस पद को पढ़ा ॥

पद । रसिक जो लागन पावै राम रंग परसंग तो छुवते बीछी को रस ज्यों रोम रोम चढ़िधावै १ हिय समुद्र तब उमँगै भाई आंखिन में रस आवै । राम झलक में मगन होइके राम राम रट लावै २

मलके अमल कहत सब कोई को अब इनहिं मनावै।
रामरंग में मल नहिं तेहिते सोई अमल कहावै ३।
ईरस पोथिन से नहिं निसरै भेद न गांठि छुवावै।
देवसुधा रस टपटप टपकै पूरा पकरि पिलावै ४॥

वार्ता। पक्का राम रंग तुमको चढ़ा अब निश्चिन्त रहो॥

पद। असिल रामको रंग बाकी सब रंगये
अलख वही लखि जात वही है जासे रंग तरंग १
श्वेत श्याम से माया रंगी तीन रंग गुणसंग।
पंच भूत मायाके रंगे जिनसे देह प्रसंग २ तीनि
लोक करमन से रंगे देखि परत छिनभंग। रामरंग
लागा नहिं छूटै दिन दिन बढ़त उमंग ३ देव अनु-
ग्रह सतसंगतिया के साधनअंग। वाही में तम रंग
रहैगो काहू से नहिं जंग ४॥

वार्ता। और सबरंग कचे हैं इसीलिये उड़िजाते हैं॥

पद। कहां तक ठहरै काचो रंग। जैसे मुलम्मा
सिखई बातें खुलत पाय परसंग १ राम रंग सांचो

जब लागै भेदि जाय सब अंग । अमिट रंगको देखि देखि कै रहत देवाना दंग २ ॥

वार्ता । उसी काल दूसरा फ़कीर आय दोनों महानों को शिर झुका बैठा हाथ जोड़ पूछा योग यज्ञ तप ज्ञान भजन इनमें भली सुगति की राह कौन है उन दोनों महानों ने कहा ॥

पद । साधो येही गति की राह श्यामको भजन करो चाहो तीरथ दान करो तुम चाहो ज्ञान औ योग ऊंचे चढ़िकै अंत गिरोगे मिटै नहीं यह रोग चाहो यतन करो १ चाहो अमर की घरिया पियो चाहो लगावो तारी चाहो योग समाधि करो तुम तेग कालकी कारी या सबको तजन करो २ श्याम होहि सब रंग अंत में श्याम न दूसर होय । कालहु को यह महाकाल है जानि लेहु सब कोय संशय तजन करो ३ मोरपंख येही दरशावत सर्प कालको काल । श्याम ब्रह्म अस श्रुति बोलत सो देवकि- सुत गोपाल याको तुम भजन करो ४ ॥

वार्ता। फेर फ़क़ीर ने हाथ जोड़ कहा मन ठहरानेकी कोई बात ऐसी कहिये जिससे अच्छी दूसरी न हो बोले पद कहता हूं ध्यान दे सुनो॥

पद। रहेउँ मैं हारि करि यतन पल भर मन न थिराइ न्याय कहौ किसमत से चंचल योग पवन से मानै। गाढ़ नाद में थिर मन काहे का निकरा राम तन १ तब थिराइ जब प्रेरक बरजै यह मत काहू छाना। तौ प्रेरक हू थिर मन नाहीं जैसे भुवको अतन २ मनके अंकुश ज्ञान कहत के उई अडगुढ़ मोहिं लागै। थिरता ज्ञान परसपर कारन बैठिहि कवनी घतन ३ चंचलतै में श्याम अचलता देखहि देव नजरिहा। मैं मलीन जनमैको आंधर परखि सकौं का रतन ४॥

वार्ता। फिर सन्त ने कहा कि कुछ साधु सन्त माहात्म्य कहिये बोले सुनो॥

पद। साधु महातम अपरम्पार। चारि तरह के जीव जगत में सबको करत उधार १ महामूढ़

जीवन को सिखवत विग्रह पूजनसार। देहातम मति ताते निश्चयात होत बड़ो अधिकार २ कुछ चेतन से कन्त्र पुजावत कहि सब विधि विस्तार। ताते अंतरसुरता उपजत बनत सकल व्यवहार ३ अधिकारिन को सिखवत आतम पूजन के उपचार। जाते इष्टदेव अस दरशत घट घट करत विहार ४॥ रया लासी छबिछाई संतन के तनमें। मुकुट धरन, शिर पेच नम्रता जगमग गुण समुदाई। ज्ञान विराग विमल दोउ कुण्डल कानन में लहराई १ ध्यान रतन माला, उर लहरत सुकरम कङ्कन भाई। रोम रोम परहितसों चंदन मह मह मह महकाई २ करम सूत्र दृढ़ता भजनहिं ते तनु छवि संत मिताई। पंच तत्व चिन्तन सों मुदरी कंठी मधुर कहाई ३ जीव देह तरु सुभग लता में नाम सुमन झरि लाई। रामलगन बिनु धिग जग जीवन धिग झूठी चतुराई ४॥

वार्त्ता। फिर उन्हों ने कहा कि अवधवासी सन्तन की महिमा कहिये। बोले॥

पद। अवध के संतनको बलिहार त्रिभुवन के शृंगार॥ निगमागम पुराण स्मृति सम्मत करि चारिउ उपचार। प्रतिदिन रामचन्द्र पद अरचत परम भक्ति अनुसार १ भाव तिलक मालाको समुझत परिहरि हृदय विकार। नाना मत कहँ एक जानिकै जीति रहे संसार २ अरचत चरचत परचत खरचत परम रम्य व्यवहार। यहिविधि उत्तम काल वितावत चिंतत राम उदार ३ जिनके हृदय वदन कमलन में रामभवँर गुंजार। देवधरम एकै दृढ़ राजत केवल पर उपकार ४॥

वार्त्ता। फेर हाथ जोड़ कहा कुछ कलिकालका वृत्तान्त कहिये॥

पद। अब आया आगम खोटा बीसो विस्वा टोटा। योगी यती सिद्ध तपसिन के ढोले भये

लँगोटा । वृथा भरम कछु मन में नाहीं फिरैं बढ़ाये झोटा १ वेश्या पहिरैं खासा मलमल लगे किनारी गोटा । कुलवन्ती दुख्यारी पावैं फटा पुराना मोटा २ दूध मलाई बांका चाखैं जगैं भांग का घोटा । रूखा चून साधु जन पावैं कबहूँ जलौ भर लोटा ३ बेमरयाद चला सब कोई क्या रे बड़ा क्या छोटा । आई राम तब याद करौगे जब खड़कैगा सोटा ४ ॥

पद ॥ अब कलियुग आवा घट घट पातक छावा । कलिको प्रथम चरण जिनि जानो द्वापर अघ दुइ चरण बखानो प्रथमहिं को तिसरो करि मानो चौथो डंकबजावा १ झूठ पखंड अकर्म अदाया पाप चरन को चौक लखाया चरन धरम को एक बचाया सोई बीज बनावा २ ज्ञान योग जिवलेइ पराने धर्म कर्म के रूप हेराने कलि के डर साधन थहराने नामै पार लगावा ३ नाम प्रताप प्रदोतित जागा जाके डर कलिको तम

भागा बाढ़त देव चरण अनुरागा जाको यश श्रुति गावा ४ ॥

वार्ता। फिर पूंछा कि पंडित राजा ब्रह्मज्ञानी वे कौन हैं जो महात्मों के मन में कसकत हैं उत्तर दिया तुमने तो तीनही पूछा महात्मों ने चार और भी कहा है ॥

पद। साती कसकत मेरे मन में। पढ़िकै जो कछु सार न काढ़ै अटका ग्रंथन में। हाकिम होय कै चाह करै जो परजन के धनमें १ ब्रह्म जानि कै जो न करै रति स्थिवर चरणन में। सकल मतन को एक न जानै भूला अनमन में २ शास्त्रन सें देखत नहिं देखत सब अपने तनमें। जगको देखि न ईशहि चीन्हत जस मुख दरपन में ३ कम नहिं ज्यादे पूरा सौदा परखत नहिं जनमें। इन सातन से देव मिलत है जिन भरमौ वनमें ४ ॥

वार्ता। फिर पूछा सार जगत् में क्या है उत्तर भजन है ॥

पद। श्याम सांवरे चरण भजन विनु किन अपनो पद पायो। विधिवत करम करत यज्ञादिक

अंत नाम गुण गायो ॥ हरि सुमिरन बिनु होत न पूरो ऐसो व्यास बतायो १ मरण काल में योगी पूरो मुखसे प्रणव कढ़ायो । हियमें सुमिरत श्याम नाम को मुदित परमगति ध्यायो २ ज्ञानिउँ ब्रह्म भूत साधन ले सकल विकार बहायो । तबहीं होत भक्ति अधिकारी अस गीता में गायो ३ वेदशास्त्र को मरम छानि जिन अपनो मान नशायो । देव अनुग्रह सतसंगति से भजन सार ठहरायो ४ ॥

वार्ता । साधारण पहिले अहङ्कार का रूप लिख चुके अब विशेष उसका स्वरूप और मिटने का उपाय लिखते हैं जिसने सारी पृथ्वी के लोगों को बिगाड़ रक्खा है एक महात्मा ने अपने शिष्य से कहा पंडित और भजनानन्दों से जुदा घर बनाना इस काल में प्रायः इन लोगों में बहुतों को अहंकार होता है इसलिये ऐसे लोगों के पास रहना अच्छा नहीं जो मुझमें कोई खोटाई देखैं तो जलैं भलाई देखैं ईर्षा करैं बहुत भजनानन्द ऐसे हैं कि सारे जन्म में एक दो पुरश्चरण कर लोगों से इतना घमण्ड करते हैं मानों उन पर कोई उपकार रखते हैं या ईश्वर के यहां से उनको बैकुण्ठ में रहने या नरक के आग से बचाने की सुन्दर पत्रिका मिली है या आपको उत्तम पुरुष

ठहराया है और दूसरों को कुत्सित बड़े अचम्भे की बात है फ़क़ीरी व वस्त्र पहने नरम कपड़ेवालों से अहंकार बहुत रखते हैं दंभ और अहङ्कार का छोड़ना बहुत उचित है दंभ और अहङ्कार ने बहुत भजनानन्द और विद्वानों को मारडाला है प्रभु कृपा करैं अहंकार से बचावैं अहङ्कार से बचने का उपाय मुख्य यह धन जन उमर कर्म और विद्या प्रायः इन पांचही का अहङ्कार होता है इन सबका देनेवाला कोई और है इतना जानने ही से अहङ्कार दूर होगा ॥

पद। पांच चीज से मिलत बड़ाई इतना तो सब जग जानै। धन जन उमर करम औ विद्या इनमें चढ़ तन की मानै १ इनको मालिक जो छठयों है ताको कोऊ न पहिचानै। सोई श्याम वसुदेव दुलारो मेरो मन कब अस छानै २ ॥

वार्ता। और दूसरा उपाय अहङ्कार मत्सररहित जो पंडित अथवा भजनानन्द हैं उनके चरणों की सेवा करे उनकी चालों को सीखे। अब भरोसे का वर्णन होता है जिसके विना भजन हो नहीं सक्ता भोजन वस्त्र आदि का प्रभु पर भरोसा करै भरोसा करने के दो भेद हैं एक भजन करने के लिये छुट्टी हो अर्थात् सोच किसी बात का न रहै वे भरोसे भजन नहीं कर सक्ता भजन

से सब कामों से निरोध होना ही बड़ा काम है जो प्रभुका भरोसा न करें दर दर भोजन के लिये फिरें और मन में भी उसी का खटका रहै फिर भजन कब करेगा भरोसावाला कोई काम प्रारंभ करना चाहे तो ईश्वर के भरोसा पर विश्वास कर बड़े पराक्रम से प्रारम्भ करता है किसी मनुष्य के डरने या अविद्या के बहकाने पर ध्यान नहीं करता पर जो विचारे ढीले मन कमजोर तनु के हैं सदा जगत्वालों का भरोसा करके रहते हैं ऐसा आदमी बड़े काम का इरादा नहीं कर सक्ता जो करता है मतलब को कम पहुँचता है भरोसा वाले को कोई रोकनेवाला नहीं है और सब जगह उसके निकट बराबर है जाड़ा गरमी बरसात सब दिन एकसा है एक महात्मा ने कहा है कि परमेश्वर पर भरोसा कर ले वो राजा प्रजा धनवान् दुःखी सब उसको मानेंगे क्योंकि उसका मालिक बहुत बड़ा है एक महात्मा ने एक आदमी को वन में देखा जैसा कि चांदी का ढाला हुआ है कहो कहां जाते हो जवाब दिया कि बहुत दूर एक मुल्क है वहां जाता हूं महात्मा ने कहा कि कुछ तुम्हारे पास नहीं कहां से खाओगे कहा जिसने पृथ्वी और आकाश को अपने बल से सम्हाला है वह मुझको भोजन न देगा भला तूने यह सोचा है दुनियां में उसके सिवाय और कोई देता है एक फ़क़ीर से एकने पूछा कि तुम पन्थ के लिये कुछ रखते हो जवाब दिया कि चार पदार्थ फिर पूछा वे चारों क्या हैं बोले लोक परलोक

में ईश्वर का राज्य जानता हूं और सारे लोगों को ईश्वर का सेवक मानता हूं और सब उद्यम को ईश्वर के आधीन देखता हूं और ईश्वर का काम सब स्थान पर जारी जानता हूं और दूसरा भेद भरोसा करने का यह है कि भरोसा छोड़ने से बड़ा डर है प्रभु ही ने पैदा किया प्रभु ही आहार देता है इससे जाना सिरजनेवाला जैसे दूसरा नहीं उसी भांति भोजन देनेवाला भी दूसरा नहीं है काठ पत्थर के बीच रहनेवाले कीड़े के मुँह में पत्ता लोगों ने देखा है भरोसा उसका करना चाहिये जो सदा जीनेवाला है और उसके जिलाने से जब जीते और पैदा करने से पैदा होते और मारने से मरते हैं एक महात्मा ने कहा जितने भजन करनेवाले हैं तिन सबके तुल्य भजन करै और प्रभुका भरोसा न धरै तो कुछ भी नहीं है एक महात्मा बहुत दिनों से भूख प्यास मार बन में भजन करता था एक ब्राह्मण किसी भांति वहां जा निकला दण्डवत् कर कहा मुझको कुछ सिखाइए जिसमें जगत् की पीड़ा से बचूं उत्तर उपदेश की छुट्टी नहीं थोड़े दिन जीने के रह गये ब्राह्मण ने न माना तीन दिन तक खड़ा रहा चौथे दिन महात्मा ने उसे देख कहा क्यों मुझे सताता है जो सीखना ही है तो यहां से थोड़ी दूर उस नगर में ब्राह्मणी है उसके पास जा सिखावैगी उसके पास गया इस कथा को कहा बोली बहुत अच्छा मैं सिखलाऊंगी पर तीन दिन पीछे तब तक तू यहां टिक चर्या देखना भी

एक सीखना है ब्राह्मण उसकी चाल देखने लगा सवेरे वह उठ शौचादि से छुट्टी भोजन कर सो रहती और इसी भांति रात को तीसरे दिन ब्राह्मण को कहा जो मेरा चर्या देखी है उसी को किया कर ब्राह्मण बोला कि खाने सोने के सिवाय और भी कुछ करती हो बोली हां ब्राह्मण बोला कि वह क्या है उत्तर दिया प्रभुके भरोसे सदा रहती हों जो कुछ प्रभु भेजता है उससे गुजरान करती हूं और दूसरे से कुछ प्रयोजन नहीं रखता और न दूसरे को अपना पालनेवाला समझती और किसी को भय देने मारनेवाला नहीं जानती सिवाय प्रभु के दूसरे से कुछ सम्बन्ध भी नहीं मानती प्रभुके निकट प्राप्ति करनेवाली एक प्रभु की कृपा है उसी का भरोसा रखती हूं और किसी उपाय से प्रभु का पाना नहीं जानती जो करती हूं प्रभु कराता है इस भांति जानती हूं इन बातों को सुनके ब्राह्मण चरणों पड़ इसी भांति करने लगा एक महात्मा ने दूसरे महात्मा से कहा मैंने अपने उद्धार की इस पद के अनुसार भगवच्चरण शरण उपाय विचारा है दूसरे ने पूंछा कि वह पद कौन है उत्तर दिया कि यह है ॥

पद । कहब का आपन करतूत जब पुछिहहिं यमदूत । रोम रोम से पापैठाना नहीं धर्मको नाम । ई सुनतै यम नरक पठैहहिं जहां बहै मलमूत १ भोग नरक बेहाया बनि बनि जन्मब बारम्बार ।

फेर बट लागलका छूटिहि जेकर नाहीं कूत २ जिय तौं नर्क रूप यह देही मुअले पर का कहिये। मानहुँ नरकें अर्थ नरक भा मोहिं अस केउ न कुपूत ३ कानी कौड़ी परकर नाहीं लागि सकत जग जानै। वासुदेव पद शरण गहेऊँ अन जेकर यमउ सभूत ४ ॥

वार्ता। इस पद को सुनिके दूसरे ने कहा कि हम भी एक दिन एक महात्मा के पास गये थे वहां देखा तो महात्मा विह्वलहो लोट लोटके इस पदको पढ़ते थे उन्होंने कहा कि वह पद कौन है उत्तर दिया कि यह है ॥

पद। मैं केहि गोहराऊँ व कहँ जाऊँ॥ मोरे कर्म मलीन देखि सब हरि बैठे मुख मोरि। दूसर को तिरलोकी नायक यह पूंछत सकुचाउँ १ संघ सँघाती दूरि निकसि गये जिनके पौरुषतन में। बिनपौरुष लाचार अकेली मैं वन में पछिताऊँ २ ज्ञान योग वैराग कर्म से पूछि पूछि मैं हारी। रा॰उर चरण शरण तब आई धन्य रावरे पाऊँ ३ प्रभु तुम समरथ मोको तारउ की कहि दीजै नाहिं। सहूं दे॰ कर्म के मानब तोर न लेबउँ नाउँ ४ ॥

वार्ता। एक महात्मा ने एक महात्मा से पूंछा कि किसभांति भरोसा करें जवाब दिया कि जैसे लड़का अपने मा बाप का भरोसा रखता है या जैसे नेवते के दिन वेखटके रहते हैं एक महात्मा से पूंछा कि निर्जल बनमें किस भांति तपस्वी दिन काटते कहां से खाते हैं जवाब दिया कि सोच करता हूं उन बुद्धियों पर जो शङ्का में डूबी हैं और उनको सिखावना क्या लगेगा भला सोच तो मा के पेट में कौन भोजन देता था दूध किसने पहुंचाया है भरोसा को दो ठौर में करना चाहिये एक प्रारब्ध में दूसरा प्रभुमें एक महात्मा ने कहा है कि परमेश्वर को चारि रीति से सेवक का पोषण करना उचित है पहिला प्रभु विश्वंभर है हम विश्व में हैं प्रभु स्वामी हम सेवकों का पालना स्वामी ही करता है, तीसरा परमेश्वर ने भोजन पाने की राह नहीं बताई है इसलिये वह जानता नहीं कौन भोजन किस ठौर से देगा और कब आवेगा जो जाने तो वहां अपने पहुँचै और ले ले जब इससे अजान ठहरा तो प्रभु का पहुंचना अत्यावश्यक भया चौथा उनको सेवा करने की आज्ञा है जो न पहुँचावेगा तो जितना काल भोजन के मिलने के व्यापार में जायगा उतने काल भजन कैसे करि सकैगा एक फ़क़ीर श्रीसरयू तीर अवध में रहता अनायास जो कुछ आता उसे खाता एक दिन एक राजा आया चरणों में शिर झुकाय कहा महराज आप मेरे नगर में चलैं तो वहां मैं बहुत भांति सेवा करूं अन्न

मल की ओर से वेखटके ठोंके भजन किया कीजै साधु बोले हमको यह भरोसा है कि जो किसी डब्बे में बन्दकर छोड़ैं तौ भी परवाह नहीं इसलिये कि विश्वम्भर सब जगह रहता है और अवध पाय कहीं जाते हैं सो अपने भाग को मिट्टी मिलाते हैं हे भाई मैं तो सब भरोसा छोड़ सीतानाथ के चरण शरण में पड़ा रहता हूं॥

पद। कवनिउँ योनि अवध जो पावै तौ यह जीव कृतारथ होय १ नाहिं तौ ब्रह्म लोक पाइउ कै गिरि है वहि वहि मरि है रोय २ अवधहि पाइ तजत हैं जे तिन्ह कर गत निज हित हारेउ खोय ३ रामदेव के चरण शरण में सब तजि सुख से रहिये सोइ ४॥

वार्ता। एक ने एक महात्मा से पूछा भरोसावाला कहीं यात्रा में भोजनादि पास रक्खे या न रक्खे जवाब पास भोजनादिक नहीं रखने आदमियों से मांगते और दुःख देते हैं उससे रखना भला है दूसरा और लोगों का भरोसा नहीं करते केवल परमेश्वर का भरोसा करते हैं और उन पदार्थों को परमेश्वर ही ने साथ कर दिया है जो कोई देता है सो प्रभु ही के दिलाने से यह उनका विश्वास रहता है केवल मन से भरोसा रक्खे कुछ भोजनादि संग लेने से मतलब नहीं मतलब मन से है बहुत आदमी भोजन पास धरते हैं या किसी से

मांगते हैं पर भीतरसे भरोसा प्रभुके सिवाय दूसरे का नहीं धरते और बहुत पास कुछ नहीं रखते हैं और मांगते भी नहीं पर ध्यान रोटी ही का करते हैं यही मन में रहता है कि अब कोई कहीं से लाता है एक दूधाधारी था कुछ पास न रखता और न किसी से मांगता एक दिन प्रारब्ध से दूध न आया दूसरे दिन सोच के लिये जो लोटा ले चले उसको यह जाने कि दूधै लिये आता है भजन सुमिरण के स्थान में दूध ही का ध्यान करने लगा दूसरे एक महात्मा का कथन है जो जाने कि भोज-आदि के बांधने से भजन और भरोसा न हो सकैगा तो न बांधै और जो जानै कि भजन में और भरोसा में न कुछ बाँधा करैगा तो बांधले भरोसावाले को चाहिये कि सब कर्मों को प्रभुको सौंपै इसमें दो गुण हैं एक यह कि मन ठहर जाता है अर्थात् किस भांति से होगा या नहीं होगा इन सङ्कल्पों को छोड़ देता है और दूसरा उस काम का पार करनेवाला बहुत बड़ा हो जाता है एक सबसे बढ़िया भरोसा में कथानक और पद लिखि के ग्रन्थ की समाप्ति करता हौं किसी एक राजा का चाकर सदा अन्न वस्त्र आदि के लिये राजा का भरोसा रखता और बड़े बड़े कामवाले जो राजा के भृत्य लोग थे उनके निकट पेट दशा दया के दांत निकाल निकालके हाहा खा खाके अपने अन्न वस्त्र खाने की बातों को किया करता पर कुछ न पाया एक महात्मा मिले उन्होंने कहा धिकार है तुझको और तेरे माता

पिता को जो तीनों लोक का भरनेवाला समर्थ साहब को छोड़ हाड़ मांस के पुतले जड़ बेचारों का भरोसा कर खराब होता है एक पद मैं कहता हूं सुन और इसी मुवाफ़िक़ चल ॥

पद । तू आशा जिनि कर आनकी । तेरे शिर पर साहब समरथ राम लषण श्रीजानकी १ जिनकी आश करहु ते आशा राखत तेरे जानकी । दें आशावंत भये तब का गनती आसनकी २ जहँ सरिता तहँ रेत अवश्यक महिमा तो बर दानकी । एतो बड़ो अनुग्रह प्रभुको ये बातैं गुरु ज्ञानकी ३ आशा कर तू सन्त चरण रज तीरथ देव मिलानकी । किसमतहू की आश न करिये आपुहि बनत जहानकी ४ ॥

पद । परम शिव विहार भूमि जयति मातु काशी । गंगा शृङ्गार हार चारि मुक्ति दासी १ वाराणसी बड़ मसान गौरि पीठि भासी । क्षेत्रमोद विपिन अंग पांचों सुखरासी २ नाभिउ सो परे परा गिरा बसत खासी । ब्रह्मको प्रकाश जहां छूटत

यमफांसी ३ अंग अंग देवतीर्थ रोम रोम वासी । पञ्चको स्वरूप महाज्योति सी प्रकाशी ४ ॥

पद । गुरु मोर आप रहतारी गुरुहि भगवान । पितुसे बड़े हितकारी मातुसी करत रखवारी । हरि अस अधम उधारी नित राखत मान १ अगम निगम की बतियां सुगम करत कहि घातियां । कर गत जस फल पतियां परत लपरमान २ दिन राति गुणहिं सिखावैं कछु गुप्तभेद बतावैं । गुरु नाम याही से कहावैं मेरुहु से गरुवान ३ गुरु सब मत में माने गुरु आदि देव बखाने । हरि आप गुरु पहिचाने अस कहत पुरान ४ ॥

दो० मध्ववंशभूषण करन निम्बाचार्य कृपाल ।
रामसखेपदवन्दिकरि को नहिं होत निहाल ॥

वार्ता । श्रीमत्काशिमहाराज ईश्वरीप्रसादनारायण सिंहजू शर्मा ने कृपाकर इस पुस्तक का शोधन किया और श्री ७ स्वामीजी गाय घाट निवासी की आज्ञा से श्री सीतारामीय हरिहरप्रसाद ने परिश्रम करि बनाया ॥

श्रीसीतारामीय हरिहरप्रसादकृतवैराग्यप्रदीपः समाप्तः ॥